



Flavia jain

11 Aug 2013

12:15 PM

Jaipur

Model: Web-KundliPhal

Order No: 121406101

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: स्त्रीलिंग
जन्म तिथि _____: 11/08/2013
दिन _____: रविवार
जन्म समय _____: 12:15:00 घंटे
इष्ट _____: 15:46:57 घटी
स्थान _____: Jaipur
राज्य _____: Rajasthan
देश _____: India

अक्षांश _____: 26:53:00 उत्तर
रेखांश _____: 75:50:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:26:40 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 11:48:20 घंटे
वेलान्तर _____: -00:05:13 घंटे
साम्पातिक काल _____: 09:07:55 घंटे
सूर्योदय _____: 05:56:13 घंटे
सूर्यास्त _____: 19:06:58 घंटे
दिनमान _____: 13:10:45 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: वर्षा
सूर्य के अंश _____: 24:43:21 कर्क
लग्न के अंश _____: 17:24:40 तुला

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: तुला - शुक्र
राशि-स्वामी _____: कन्या - बुध
नक्षत्र-चरण _____: हस्त - 2
नक्षत्र स्वामी _____: चन्द्र
योग _____: साध्य
करण _____: बव
गण _____: देव
योनि _____: महिष
नाड़ी _____: आद्य
वर्ण _____: वैश्य
वश्य _____: मानव
वर्ग _____: मेष
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: भूमि
जन्म नामाक्षर _____: ष-षटतिला
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: लौह - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: सिंह

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1935	श्रावण	20
पंजाबी	संवत : 2070	श्रावण	27
बंगाली	सन् : 1420	श्रावण	26
तमिल	संवत : 2070	आदी	27
केरल	कोल्लम : 1188	कर्कदम	26
नेपाली	संवत : 2070	श्रावण	27
चैत्रादि	संवत : 2070	श्रावण	शुक्ल 4
कार्तिकादि	संवत : 2070	श्रावण	शुक्ल 4

पंचांग

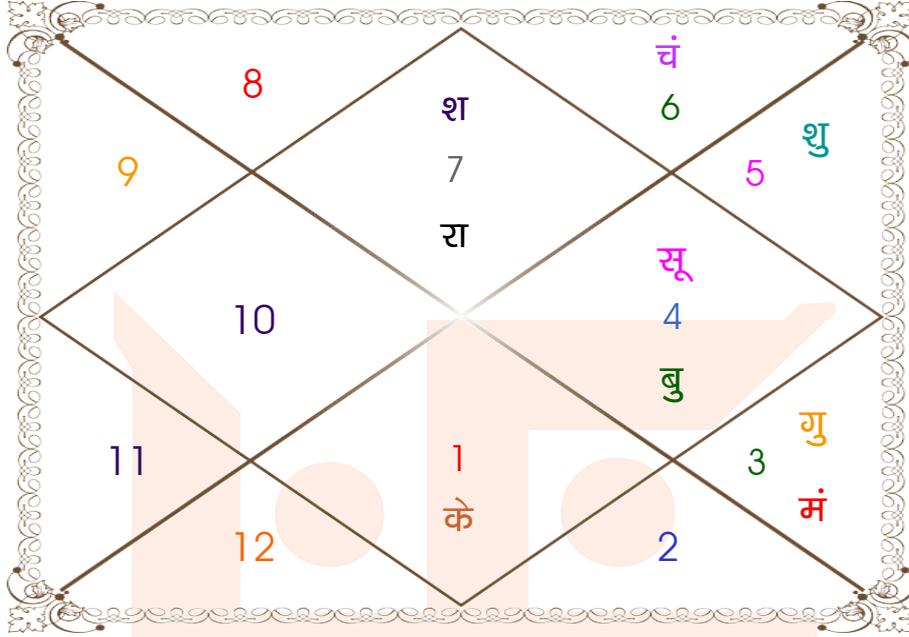
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 4
तिथि समाप्ति काल _____ : 06:52:28
जन्म तिथि _____ : 5
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : हस्त
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 26:51:54 घंटे
जन्म योग _____ : हस्त
सूर्योदय कालीन योग _____ : सिद्ध
योग समाप्ति काल _____ : 12:01:54 घंटे
जन्म योग _____ : साध्य
सूर्योदय कालीन करण _____ : विष्टि
करण समाप्ति काल _____ : 06:52:28 घंटे
जन्म करण _____ : बव
भयात _____ : 25:06:49
भभोग _____ : 61:39:03
भोग्य दशा काल _____ : चंद्र 5 वर्ष 11 मा 11 दि

घात चक्र

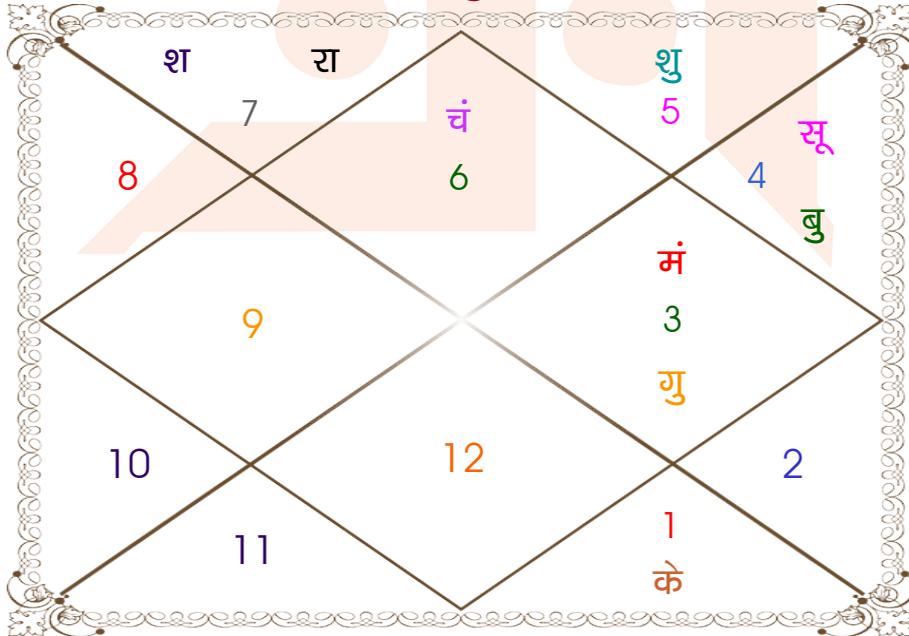
मास _____ : भाद्रपद
तिथि _____ : 5-10-15
दिन _____ : शनिवार
नक्षत्र _____ : श्रवण
योग _____ : शुक्ल
करण _____ : कौलव
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : श्वान
लग्न _____ : मीन
सूर्य _____ : मेष
चन्द्र _____ : वृश्चिक
मंगल _____ : वृष
बुध _____ : मीन
गुरु _____ : मिथुन
शुक्र _____ : कर्क
शनि _____ : मीन
राहु _____ : सिंह

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

	के		मं गु
			बु सू
			शु
		रा ल श	चं

लग्न कुण्डली

गु मं		के	
	बु सू		
शु		श ल रा	
	चं		

विंशोत्तरी
चन्द्र 5वर्ष 11मा 11दि
चन्द्र

11/08/2013

24/07/2129

चन्द्र	23/07/2019
मंगल	23/07/2026
राहु	22/07/2044
गुरु	22/07/2060
शनि	23/07/2079
बुध	22/07/2096
केतु	24/07/2103
शुक्र	24/07/2123
सूर्य	24/07/2129

योगिनी
संकटा 4वर्ष 9मा 2दि
भामरी

14/05/2024

14/05/2028

भामरी	24/10/2024
भद्रिका	14/05/2025
उल्का	13/01/2026
सिद्धा	24/10/2026
संकटा	14/09/2027
मंगला	24/10/2027
पिंगला	13/01/2028
धान्या	14/05/2028

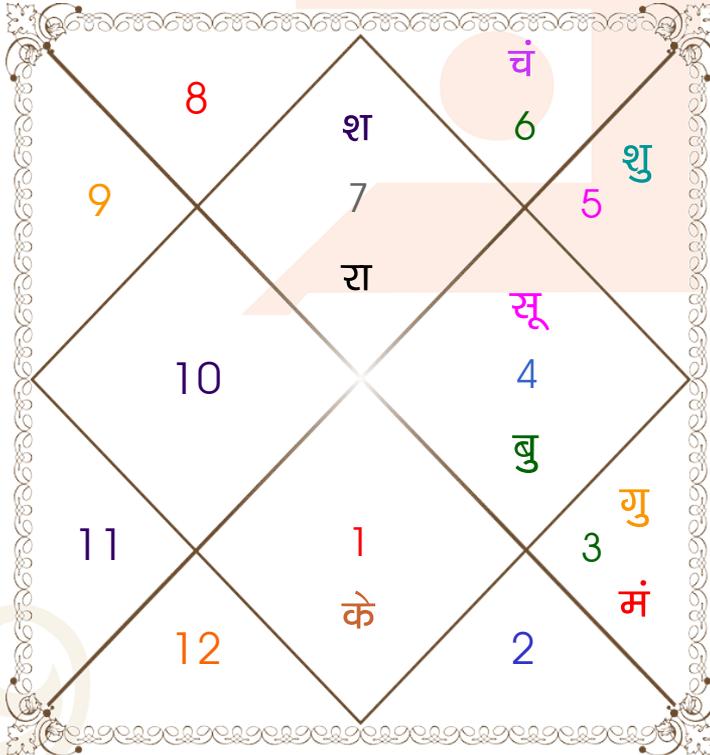
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व अ राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न	तुला	17:24:40	312:16:35	स्वाति	4 15	शुक्र	राहु	शुक्र	---
सूर्य	कर्क	24:43:21	00:57:35	आश्लेषा	3 9	चंद्र	बुध	राहु	मित्र राशि
चंद्र	कन्या	15:24:14	12:57:17	हस्त	2 13	बुध	चंद्र	गुरु	मित्र राशि
मंगल	मिथु	25:04:14	00:39:15	पुनर्वसु	2 7	बुध	गुरु	बुध	शत्रु राशि
बुध	कर्क	10:51:04	01:50:32	पुष्य	3 8	चंद्र	शनि	सूर्य	शत्रु राशि
गुरु	मिथु	16:03:11	00:12:04	आर्द्रा	3 6	बुध	राहु	शुक्र	शत्रु राशि
शुक्र	सिंह	29:34:34	01:11:22	उ०फाल्गुनी	1 12	सूर्य	सूर्य	राहु	शत्रु राशि
शनि	तुला	11:42:01	00:03:13	स्वाति	2 15	शुक्र	राहु	शनि	उच्च राशि
राहु	व तुला	17:14:31	00:04:16	स्वाति	4 15	शुक्र	राहु	शुक्र	मित्र राशि
केतु	व मेष	17:14:31	00:04:16	भरणी	2 2	मंगल	शुक्र	चंद्र	मित्र राशि
हर्ष	व मीन	18:14:00	00:01:08	रेवती	1 27	गुरु	बुध	बुध	---
नेप	व कुंभ	10:20:24	00:01:34	शतभिषा	2 24	शनि	राहु	गुरु	---
प्लूटो	व धनु	15:19:27	00:01:05	पूर्वाषाढा	1 20	गुरु	शुक्र	शुक्र	---
दशम भाव	कर्क	20:28:08	--	आश्लेषा	-- 9	चंद्र	बुध	शुक्र	--

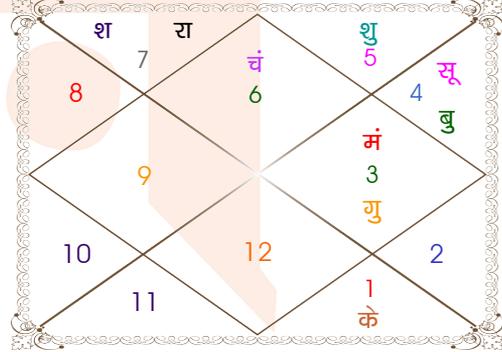
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:03:03

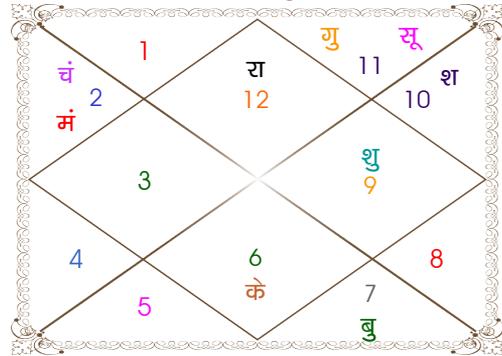
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	तुला 02:55:15	तुला 17:24:40
2	वृश्चिक 02:55:15	वृश्चिक 18:25:49
3	धनु 03:56:24	धनु 19:26:58
4	मकर 04:57:33	मकर 20:28:08
5	कुम्भ 04:57:33	कुम्भ 19:26:58
6	मीन 03:56:24	मीन 18:25:49
7	मेष 02:55:15	मेष 17:24:40
8	वृष 02:55:15	वृष 18:25:49
9	मिथुन 03:56:24	मिथुन 19:26:58
10	कर्क 04:57:33	कर्क 20:28:08
11	सिंह 04:57:33	सिंह 19:26:58
12	कन्या 03:56:24	कन्या 18:25:49

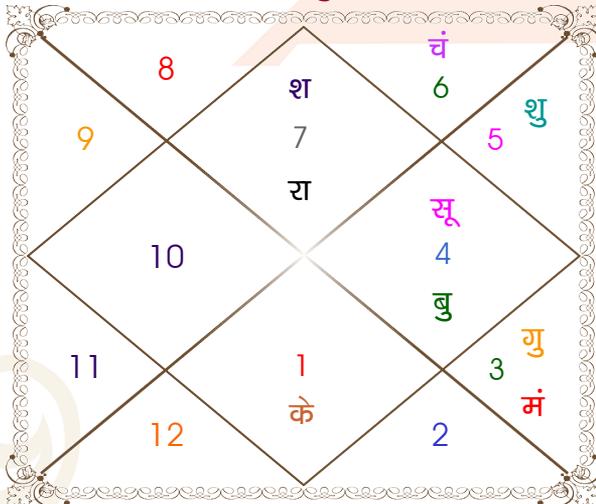
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	तुला	17:24:40
2	वृश्चिक	16:37:43
3	धनु	17:46:48
4	मकर	20:28:08
5	कुम्भ	22:45:45
6	मीन	22:03:06
7	मेष	17:24:40
8	वृष	16:37:43
9	मिथुन	17:46:48
10	कर्क	20:28:08
11	सिंह	22:45:45
12	कन्या	22:03:06

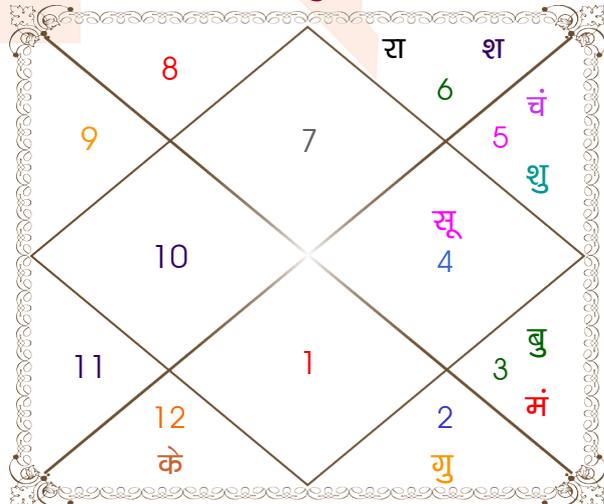
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी

चलित कुंडली



भाव कुंडली



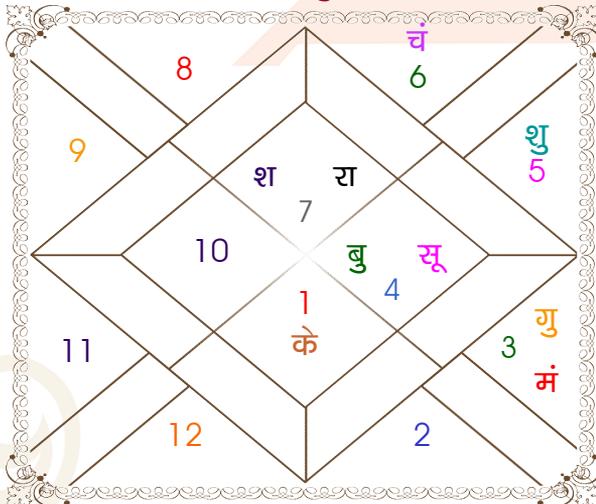
कारक, अवस्था, रश्मि

ग्रह	कारक		अवस्था				ग्रह बल
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	
सूर्य	भातृ	पितृ	बाल	मुदित	कौतुक	5.58	91 %
चंद्र	पुत्र	मातृ	युवा	मुदित	भोजन	3.17	32 %
मंगल	अमात्य	भातृ	मृत	खल	कौतुक	0.91	54 %
बुध	कलत्र	ज्ञाति	वृद्ध	खल	सभा	3.22	61 %
गुरु	मातृ	धन	युवा	खल	गमन	6.26	41 %
शुक्र	आत्मा	कलत्र	मृत	खल	कौतुक	1.22	29 %
शनि	ज्ञाति	आयु	कुमार	दीप्त	कौतुक	14.31	38 %
राहु	---	ज्ञान	युवा	मुदित	कौतुक	0.00	1 %
केतु	---	मोक्ष	युवा	मुदित	कौतुक	0.00	1 %
कुल						34.67	

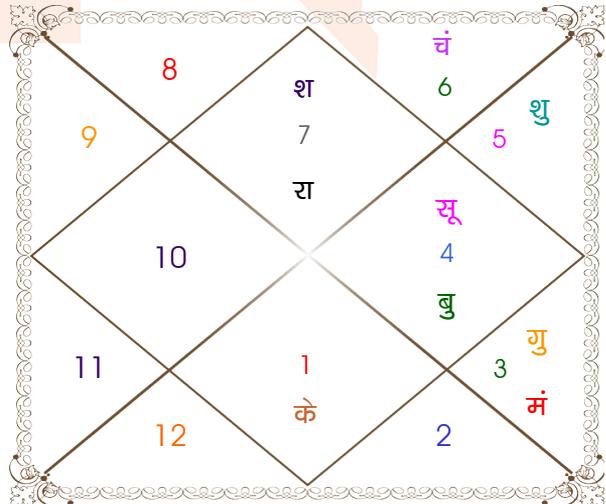
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी

चलित कुंडली



लग्न-चलित



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : चन्द्र 5 वर्ष 11 मास 11 दिन

चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष
11/08/2013 23/07/2019	23/07/2019 23/07/2026	23/07/2026 22/07/2044	22/07/2044 22/07/2060	22/07/2060 23/07/2079
00/00/0000	मंगल 19/12/2019	राहु 04/04/2029	गुरु 10/09/2046	शनि 26/07/2063
00/00/0000	राहु 06/01/2021	गुरु 29/08/2031	शनि 23/03/2049	बुध 04/04/2066
11/08/2013	गुरु 13/12/2021	शनि 05/07/2034	बुध 29/06/2051	केतु 14/05/2067
गुरु 22/10/2013	शनि 22/01/2023	बुध 21/01/2037	केतु 04/06/2052	शुक्र 14/07/2070
शनि 23/05/2015	बुध 19/01/2024	केतु 09/02/2038	शुक्र 03/02/2055	सूर्य 26/06/2071
बुध 22/10/2016	केतु 16/06/2024	शुक्र 08/02/2041	सूर्य 22/11/2055	चंद्र 24/01/2073
केतु 23/05/2017	शुक्र 16/08/2025	सूर्य 03/01/2042	चंद्र 23/03/2057	मंगल 05/03/2074
शुक्र 22/01/2019	सूर्य 22/12/2025	चंद्र 05/07/2043	मंगल 27/02/2058	राहु 09/01/2077
सूर्य 23/07/2019	चंद्र 23/07/2026	मंगल 22/07/2044	राहु 22/07/2060	गुरु 23/07/2079

बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष
23/07/2079 22/07/2096	22/07/2096 24/07/2103	24/07/2103 24/07/2123	24/07/2123 24/07/2129	24/07/2129 00/00/0000
बुध 19/12/2081	केतु 19/12/2096	शुक्र 23/11/2106	सूर्य 11/11/2123	चंद्र 24/05/2130
केतु 16/12/2082	शुक्र 18/02/2098	सूर्य 23/11/2107	चंद्र 11/05/2124	मंगल 23/12/2130
शुक्र 16/10/2085	सूर्य 26/06/2098	चंद्र 24/07/2109	मंगल 16/09/2124	राहु 23/06/2132
सूर्य 22/08/2086	चंद्र 25/01/2099	मंगल 23/09/2110	राहु 11/08/2125	गुरु 12/08/2133
चंद्र 22/01/2088	मंगल 23/06/2099	राहु 23/09/2113	गुरु 30/05/2126	00/00/0000
मंगल 18/01/2089	राहु 11/07/2100	गुरु 24/05/2116	शनि 12/05/2127	00/00/0000
राहु 07/08/2091	गुरु 17/06/2101	शनि 24/07/2119	बुध 18/03/2128	00/00/0000
गुरु 12/11/2093	शनि 27/07/2102	बुध 24/05/2122	केतु 23/07/2128	00/00/0000
शनि 22/07/2096	बुध 24/07/2103	केतु 24/07/2123	शुक्र 24/07/2129	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल चंद्र 5 वर्ष 11 मा 4 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - चंद्र	राहु - राहु	राहु - गुरु	राहु - शनि	राहु - बुध
22/12/2025	23/07/2026	04/04/2029	29/08/2031	05/07/2034
23/07/2026	04/04/2029	29/08/2031	05/07/2034	21/01/2037
चंद्र 09/01/2026	राहु 18/12/2026	गुरु 30/07/2029	शनि 10/02/2032	बुध 14/11/2034
मंगल 21/01/2026	गुरु 28/04/2027	शनि 16/12/2029	बुध 06/07/2032	केतु 07/01/2035
राहु 22/02/2026	शनि 01/10/2027	बुध 19/04/2030	केतु 05/09/2032	शुक्र 11/06/2035
गुरु 22/03/2026	बुध 18/02/2028	केतु 09/06/2030	शुक्र 25/02/2033	सूर्य 28/07/2035
शनि 25/04/2026	केतु 16/04/2028	शुक्र 02/11/2030	सूर्य 18/04/2033	चंद्र 13/10/2035
बुध 25/05/2026	शुक्र 27/09/2028	सूर्य 16/12/2030	चंद्र 14/07/2033	मंगल 07/12/2035
केतु 07/06/2026	सूर्य 15/11/2028	चंद्र 27/02/2031	मंगल 13/09/2033	राहु 24/04/2036
शुक्र 12/07/2026	चंद्र 06/02/2029	मंगल 19/04/2031	राहु 16/02/2034	गुरु 27/08/2036
सूर्य 23/07/2026	मंगल 04/04/2029	राहु 29/08/2031	गुरु 05/07/2034	शनि 21/01/2037
राहु - केतु	राहु - शुक्र	राहु - सूर्य	राहु - चंद्र	राहु - मंगल
21/01/2037	09/02/2038	08/02/2041	03/01/2042	05/07/2043
09/02/2038	08/02/2041	03/01/2042	05/07/2043	22/07/2044
केतु 12/02/2037	शुक्र 10/08/2038	सूर्य 25/02/2041	चंद्र 18/02/2042	मंगल 27/07/2043
शुक्र 17/04/2037	सूर्य 04/10/2038	चंद्र 24/03/2041	मंगल 22/03/2042	राहु 23/09/2043
सूर्य 07/05/2037	चंद्र 03/01/2039	मंगल 12/04/2041	राहु 12/06/2042	गुरु 13/11/2043
चंद्र 07/06/2037	मंगल 08/03/2039	राहु 01/06/2041	गुरु 24/08/2042	शनि 13/01/2044
मंगल 30/06/2037	राहु 20/08/2039	गुरु 14/07/2041	शनि 19/11/2042	बुध 07/03/2044
राहु 26/08/2037	गुरु 13/01/2040	शनि 04/09/2041	बुध 04/02/2043	केतु 29/03/2044
गुरु 17/10/2037	शनि 04/07/2040	बुध 21/10/2041	केतु 08/03/2043	शुक्र 01/06/2044
शनि 16/12/2037	बुध 06/12/2040	केतु 09/11/2041	शुक्र 08/06/2043	सूर्य 20/06/2044
बुध 09/02/2038	केतु 08/02/2041	शुक्र 03/01/2042	सूर्य 05/07/2043	चंद्र 22/07/2044
गुरु - गुरु	गुरु - शनि	गुरु - बुध	गुरु - केतु	गुरु - शुक्र
22/07/2044	10/09/2046	23/03/2049	29/06/2051	04/06/2052
10/09/2046	23/03/2049	29/06/2051	04/06/2052	03/02/2055
गुरु 03/11/2044	शनि 03/02/2047	बुध 18/07/2049	केतु 19/07/2051	शुक्र 13/11/2052
शनि 07/03/2045	बुध 14/06/2047	केतु 04/09/2049	शुक्र 14/09/2051	सूर्य 01/01/2053
बुध 25/06/2045	केतु 07/08/2047	शुक्र 20/01/2050	सूर्य 01/10/2051	चंद्र 23/03/2053
केतु 10/08/2045	शुक्र 08/01/2048	सूर्य 03/03/2050	चंद्र 29/10/2051	मंगल 19/05/2053
शुक्र 17/12/2045	सूर्य 24/02/2048	चंद्र 11/05/2050	मंगल 18/11/2051	राहु 12/10/2053
सूर्य 25/01/2046	चंद्र 11/05/2048	मंगल 28/06/2050	राहु 08/01/2052	गुरु 19/02/2054
चंद्र 31/03/2046	मंगल 04/07/2048	राहु 30/10/2050	गुरु 22/02/2052	शनि 23/07/2054
मंगल 16/05/2046	राहु 20/11/2048	गुरु 18/02/2051	शनि 16/04/2052	बुध 08/12/2054
राहु 10/09/2046	गुरु 23/03/2049	शनि 29/06/2051	बुध 04/06/2052	केतु 03/02/2055

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - सूर्य	गुरु - चंद्र	गुरु - मंगल	गुरु - राहु	शनि - शनि
03/02/2055	22/11/2055	23/03/2057	27/02/2058	22/07/2060
22/11/2055	23/03/2057	27/02/2058	22/07/2060	26/07/2063
सूर्य 17/02/2055	चंद्र 02/01/2056	मंगल 12/04/2057	राहु 08/07/2058	शनि 12/01/2061
चंद्र 14/03/2055	मंगल 30/01/2056	राहु 02/06/2057	गुरु 02/11/2058	बुध 17/06/2061
मंगल 31/03/2055	राहु 12/04/2056	गुरु 17/07/2057	शनि 21/03/2059	केतु 20/08/2061
राहु 14/05/2055	गुरु 16/06/2056	शनि 09/09/2057	बुध 23/07/2059	शुक्र 19/02/2062
गुरु 22/06/2055	शनि 01/09/2056	बुध 28/10/2057	केतु 12/09/2059	सूर्य 15/04/2062
शनि 07/08/2055	बुध 09/11/2056	केतु 17/11/2057	शुक्र 05/02/2060	चंद्र 16/07/2062
बुध 17/09/2055	केतु 07/12/2056	शुक्र 12/01/2058	सूर्य 20/03/2060	मंगल 18/09/2062
केतु 04/10/2055	शुक्र 27/02/2057	सूर्य 29/01/2058	चंद्र 01/06/2060	राहु 02/03/2063
शुक्र 22/11/2055	सूर्य 23/03/2057	चंद्र 27/02/2058	मंगल 22/07/2060	गुरु 26/07/2063
शनि - बुध	शनि - केतु	शनि - शुक्र	शनि - सूर्य	शनि - चंद्र
26/07/2063	04/04/2066	14/05/2067	14/07/2070	26/06/2071
04/04/2066	14/05/2067	14/07/2070	26/06/2071	24/01/2073
बुध 12/12/2063	केतु 28/04/2066	शुक्र 23/11/2067	सूर्य 31/07/2070	चंद्र 13/08/2071
केतु 08/02/2064	शुक्र 04/07/2066	सूर्य 20/01/2068	चंद्र 29/08/2070	मंगल 16/09/2071
शुक्र 21/07/2064	सूर्य 25/07/2066	चंद्र 25/04/2068	मंगल 18/09/2070	राहु 11/12/2071
सूर्य 08/09/2064	चंद्र 27/08/2066	मंगल 02/07/2068	राहु 09/11/2070	गुरु 27/02/2072
चंद्र 29/11/2064	मंगल 20/09/2066	राहु 22/12/2068	गुरु 26/12/2070	शनि 28/05/2072
मंगल 25/01/2065	राहु 20/11/2066	गुरु 25/05/2069	शनि 19/02/2071	बुध 18/08/2072
राहु 22/06/2065	गुरु 13/01/2067	शनि 24/11/2069	बुध 09/04/2071	केतु 21/09/2072
गुरु 31/10/2065	शनि 18/03/2067	बुध 07/05/2070	केतु 29/04/2071	शुक्र 26/12/2072
शनि 04/04/2066	बुध 14/05/2067	केतु 14/07/2070	शुक्र 26/06/2071	सूर्य 24/01/2073
शनि - मंगल	शनि - राहु	शनि - गुरु	बुध - बुध	बुध - केतु
24/01/2073	05/03/2074	09/01/2077	23/07/2079	19/12/2081
05/03/2074	09/01/2077	23/07/2079	19/12/2081	16/12/2082
मंगल 17/02/2073	राहु 08/08/2074	गुरु 12/05/2077	बुध 25/11/2079	केतु 09/01/2082
राहु 18/04/2073	गुरु 25/12/2074	शनि 06/10/2077	केतु 15/01/2080	शुक्र 10/03/2082
गुरु 11/06/2073	शनि 08/06/2075	बुध 14/02/2078	शुक्र 10/06/2080	सूर्य 28/03/2082
शनि 14/08/2073	बुध 02/11/2075	केतु 09/04/2078	सूर्य 24/07/2080	चंद्र 28/04/2082
बुध 11/10/2073	केतु 02/01/2076	शुक्र 10/09/2078	चंद्र 05/10/2080	मंगल 19/05/2082
केतु 03/11/2073	शुक्र 23/06/2076	सूर्य 26/10/2078	मंगल 25/11/2080	राहु 12/07/2082
शुक्र 10/01/2074	सूर्य 14/08/2076	चंद्र 11/01/2079	राहु 06/04/2081	गुरु 29/08/2082
सूर्य 30/01/2074	चंद्र 09/11/2076	मंगल 06/03/2079	गुरु 02/08/2081	शनि 26/10/2082
चंद्र 05/03/2074	मंगल 09/01/2077	राहु 23/07/2079	शनि 19/12/2081	बुध 16/12/2082

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

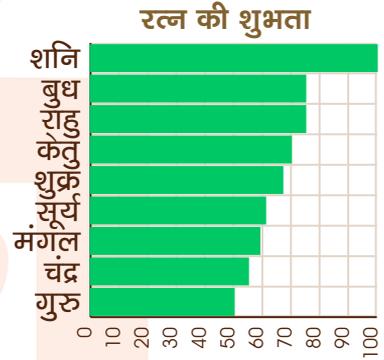
मूलांक	2
भाग्यांक	7
मित्र अंक	2, 7, 8
शत्रु अंक	4, 5, 6
शुभ वर्ष	20,29,38,47,56
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	वृष, मिथुन
मित्र लग्न	मकर, मिथुन, सिंह
अनुकूल देवता	गणेश
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	पन्ना
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
नीलम	शनि	100%	स्वास्थ्य, सुख, सन्तति सुख
पन्ना	बुध	75%	व्यावसायिक उन्नति, भाग्योदय, कम खर्च
गोमेद	राहु	75%	स्वास्थ्य, धनार्जन
लहसुनिया	केतु	70%	दम्पति, भाग्योदय
हीरा	शुक्र	67%	धनार्जन, दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य
माणिक्य	सूर्य	61%	व्यावसायिक उन्नति, धनार्जन
मूंगा	मंगल	59%	भाग्योदय, दम्पति, धन
मोती	चंद्र	55%	कम खर्च, व्यावसायिक उन्नति
पुखराज	गुरु	50%	भाग्योदय, पराक्रम, शत्रु व रोग मुक्ति



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
चंद्र	23/07/2019	67%	67%	59%	81%	50%	67%	100%	62%	58%
मंगल	23/07/2026	67%	61%	72%	62%	56%	67%	100%	62%	77%
राहु	22/07/2044	47%	34%	44%	75%	50%	73%	100%	88%	58%
गुरु	22/07/2060	67%	61%	66%	62%	62%	55%	100%	75%	70%
शनि	23/07/2079	47%	34%	44%	81%	50%	73%	100%	81%	58%
बुध	22/07/2096	67%	34%	59%	88%	50%	73%	100%	75%	70%
केतु	24/07/2103	47%	34%	66%	75%	50%	73%	98%	62%	83%
शुक्र	24/07/2123	47%	34%	59%	81%	50%	80%	100%	81%	77%
सूर्य	24/07/2129	73%	61%	66%	75%	56%	55%	98%	62%	58%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत् ॥

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते हैं। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते हैं। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ हैं तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते हैं।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते हैं। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए नीलम, पन्ना व गोमेद रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

पन्ना आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

नीलम व गोमेद रत्न आपके कारक रत्न हैं। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए लहसुनिया, हीरा, माणिक्य, मूंगा, मोती एवं पुखराज रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

नीलम

आपकी कुंडली में शनि लग्न भाव में स्थित है। आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। शनि रत्न नीलम आपकी परिश्रम क्षमता एवं कार्यकुशलता में वृद्धि करेगा। सरकारी पक्ष व पिता से सहयोग प्राप्त होगा। प्रथम भाव में स्थित शनि की दृष्टि तृतीय, सप्तम एवं दशम भाव पर आ रही है। शनि रत्न नीलम की शुभता से भाग्योदय, सम्मान एवं लाभ की प्राप्ति होगी। जीवन साथी से सहयोग प्राप्त होगा। भाई-बंधुओं से सुख-स्नेह प्राप्ति में भी यह रत्न सहयोग करेगा। नीलम रत्न आपके पुरुषार्थ भाव में वृद्धि कर रहे हैं।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में शनि चतुर्थेश एवं पंचमेश है। शनि का रत्न नीलम आपके लिए विशेष रूप से शुभ रत्न है। आप इसे धारण कर शनि की शुभता प्राप्त कर सकते हैं। नीलम रत्न आपको पौराणिक विषयों से शिक्षा प्राप्ति के अवसर दे सकता है। यह रत्न आपके संतान स्वास्थ्य को प्रबल कर अनुकूल बनाए रखेगा। नीलम रत्न शुभता से आपके अपनी संतान से संबंध मजबूत हो सकते हैं। ज्ञान प्राप्ति के लिए यह रत्न आपको सर्वोत्तम फल प्रदान कर सकता है। रत्न प्रभाव से कुटुंब में वृद्धि, भूमि-भवन के मामलों में शुभ परिणाम प्राप्त हो सकते हैं।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ॐ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्नी, अन्यथा 5-6 रत्नी का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध दशम भाव में स्थित है। आपको बुध रत्न पन्ना धारण करना चाहिए। पन्ना रत्न आपकी न्यायप्रियता और नीतिनिपुणता में वृद्धि करेगा। रत्न शुभता आपको विवेकवान। गुणवान और सत्यवादी व्यक्ति बनेंगे। यह रत्न आपके धैर्य और विनम्रता को बढ़ाएगा। परिस्थिति अनुसार बोलने का कौशल यह रत्न पन्ना आपको दे सकता है। रत्न प्रभाव आपको यशस्वी और व्यवहार कुशल बनाएगा। रत्न धारण करने के बाद आपको विभिन्न प्रकार के वाहनों का सुख प्राप्त होगा। रत्न शुभता आपको धनाढ्य और संपत्तिवान बनाएगी। व्यापार के माध्यम से लाभ, सफलता दोनों देगा।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में बुध नवमेश व द्वादशेश है। बुध ग्रह आपके लिए शुभ है। यहां बुध लग्नेश शुक्र का मित्र भी है इसलिए ओर अधिक शुभ हो गया है। इसकी शुभता प्राप्त करने के लिए आप बुध रत्न पन्ना धारण करें। पन्ना रत्न आपके लिए भाग्योदय रत्न सिद्ध हो सकता है। इस रत्न को धारण कर आप दांपत्य जीवन के सुखों में वृद्धि कर सकता है। बुध रत्न पन्ना आपको धर्म, पुण्य, भाग्य, गुरु, देवता, तीर्थ यात्रा, दान इत्यादि विषयों से संलग्न कर सकता है। यह रत्न आपको बौद्धिक कार्यों में भाग्य का सहयोग दे सकता है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूठी में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत्त होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ॐ बुं बुधाय नमः का 9 माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं

जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु लग्न भाव में स्थित है। अतः आपको राहु रत्न गोमेद धारण करना चाहिए। राहु रत्न गोमेद आपको मनस्वी एवं साहसी बनाएगा तथा रत्न आपके चातुर्य योग्यता को बढ़ायेगा। रत्न के शुभ प्रभाव से आपको विवाद में विजय, अध्ययनशीलता एवं कार्यकुशलता कौशल की प्राप्त होगी। लग्न भाव से राहु सप्तम को देख रहे हैं जिसके कारण गोमेद रत्न धारण करने से आपका वैवाहिक जीवन सुखमय हो सकता है। इस रत्न को धारण करने से आप भ्रम मुक्त जीवन का आनंद लेंगे।

राहु तुला राशि में स्थित है व इसका स्वामी शुक्र एकादश भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न आपको अनेक क्षेत्रों से आय प्राप्त के स्रोत देगा। यह रत्न आपको विवाद विजयी, विनोदी और स्वाभिमानी बनाएगा। इस रत्न को धारण करने पर आप वाहन आदि से सुखी होंगे। परदेश में यह आपका भाग्योदय करेगा। रत्न प्रभाव से आप अत्यधिक महत्वकांक्षी हो सकते हैं। यह रत्न आपको व्यवसायी, सरकार से प्रतिष्ठा एवं व्यावसायिक लाभ प्राप्त करेंगे। रत्न शुभता आपको अन्न, वस्त्र, अलंकार, धन, पशु, वाहन आदि से सुखी करेगी। इसके अतिरिक्त इस रत्न को धारण करने पर आप धन-धान्य से युक्त होंगे। यह रत्न आपके अंकार भाव को भी नियंत्रित रखेगा।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान कराएँ। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूठी में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ॐ रां राहवे नमः का 90८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु सप्तम भाव में स्थित है। आपको केतु रत्न लहसुनिया धारण करना चाहिए। केतु रत्न लहसुनिया आर्थिक मामलों में आपके लिए लाभदायक सिद्ध होगा।

लहसुनिया रत्न धारण कर आप अपने दांपत्य जीवन को स्नेहयुक्त बनाये रखने में भी यह रत्न महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इस रत्न की शुभता से आपको धन का उत्तम सुख प्राप्त होगा। आपकी आर्थिक चिन्ताओं का अंत होगा। रत्न प्रभाव से आपकी यात्राएं सुखद एवं सफल होंगी। वात रोग, अंतडियों के रोग और वीर्य संबंधी रोगों में कमी हो सकती है।

केतु मेष राशि में स्थित है व इसका स्वामी मंगल नवम भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आपके जीवन के शुभ फलों की अधिकता होगी। आप धार्मिक कार्यों में रुचि लेंगे। आपको लोगों द्वारा पसंद किया जाएगा। रत्न शुभता से आपको अपने सभी प्रयासों में सफलता प्राप्त होगी। यह रत्न आपको भाग्यशाली बना रहा है। इस रत्न की शुभता से आप प्रवासी हो सकते हैं तथा यह रत्न आपको तीर्थाटन प्रवृत्ति देगा। आप धार्मिक, उदार, कृ तज्ञ, दयालु, देव- भक्त, भाई बन्धुओं के संरक्षक, प्रसिद्ध तथा पराक्रमी होंगे। एवं यह रत्न आपको अनेक प्रकार के धन रत्नादि से सुखी तथा सभी प्रकार की सुख समृद्धि देगा।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूठी में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ॐ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार हैं- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र एकादश भाव में स्थित है। शुक्र ग्रह की पूर्ण शुभता प्राप्त करने के लिए आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। हीरा रत्न आपको उदार, सदाचार संपन्न, सुशील और परोपकारी बनाएगा। हीरा रत्न से आप अपने वाकचातुर्य के कारण प्रसिद्ध होंगे। अनेक वाहनों का सुख आपको यह रत्न दे सकता है। शुक्र रत्न हीरे की शुभता आपको समृद्धि और सम्पन्नता देगी। इस रत्न प्रभाव से नियमित रूप से आपके पास धनागमन होता रहेगा और दिनों दिन धनवृद्धि होती जाएगी।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में शुक्र लग्नेश एवं अष्टमेश है। शुक्र रत्न हीरा धारण करना आपके लिए शुभ रहेगा। स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए भी आप हीरा रत्न धारण कर सकते हैं। शुक्र रत्न हीरा आपके शरीर, आयु, मस्तिष्क, आपका स्वभाव और संपूर्ण व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाये रखने में सहयोगी हो सकता है। हीरा अष्टमेश का भी रत्न होने के कारण आपको मानसिक चिन्ताओं से बचाएगा, दुर्भाग्य का नाश, ससुराल से मधुर संबंध, अस्पताल आदि विषयों में राहत दे सकता है। अपने स्वास्थ्य और आयुवृद्धि के लिए आप हीरा रत्न धारण कर सकते हैं।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ॐ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा १ रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य दशम भाव में स्थित है। आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न आपको बुद्धिमान, विद्वान और प्रसिद्ध बनाएगा। इसकी शुभता से आप आत्मविश्वास से भरे हुए आर्थिक रूप से सुदृढ़ व्यक्ति होंगे। रत्न शक्तियां आपको कार्यक्षेत्र में अधिकारिक शक्तियां प्राप्त करने में सहयोग करेंगी। आपको सरकारी क्षेत्र में नौकरी प्राप्त हो सकती है। आजीविका क्षेत्र में भी आपको उच्चाधिकारियों का सुख-सहयोग सहजता से प्राप्त होगा। यह रत्न आपको कार्यक्षेत्र में बड़ी सफलता दिला सकता है। रत्न शुभता से नेतृत्व करने की अद्भुत योग्यता सामने आयेगी।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में सूर्य एकादश भाव के स्वामी है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर आप सूर्य को बल प्रदान कर सकते हैं। माणिक्य रत्न धारण करने से आपके शारीरिक बल का विकास होगा। यह माणिक्य रत्न आय क्षेत्रों में आपको प्रभावशाली बना सकता है। रत्न शुभता से आपका आत्मविश्वास उच्च रहेगा। इसके साथ ही यह रत्न आपकी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने में भी शुभ रत्न सिद्ध हो सकता है। सूर्य रत्न माणिक्य आपको उच्च पद और सरकारी क्षेत्रों से आय प्राप्ति के साधन उपलब्ध करा सकता है।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत्त होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ॐ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तदपश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ हैं तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक,

गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल नवम भाव में स्थित है। मंगल रत्न मूंगा धारण कर आप मंगल ग्रह की शुभता प्राप्त करें। मूंगा रत्न आपकी नेतृत्व शक्ति बढ़ाकर आपको उच्चाधिकारी बनाएगा। मूंगा रत्न से आप स्वाभिमानी बनेंगे। मूंगा रत्न आपको मित्रों में श्रेष्ठ बनाएगा। रत्न शुभता विदेशी यात्राओं को सफल कर आपको लाभ दिलाएगी। रत्न शक्तियां आपको आत्मिक रूप से धार्मिक बनाए रखेंगी। यह रत्न आपके पुरुषार्थ भाव को बढ़ाकर आपको साहसपूर्ण कार्य करने की ओर प्रेरित करेगा। मूंगा रत्न धारण से भूमि-भवन के कार्य भी पूरे होंगे।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में मंगल द्वितीय भाव एवं सप्तम भाव के स्वामी है। मंगल के सभी शुभ फल पाने के लिए आप मूंगा रत्न धारण कर सकते हैं। मूंगा रत्न धारण करने से आपके कुटुंब सुख व पराक्रम में वृद्धि हो सकती है। यह रत्न आपके दांपत्य सुख में भी बढ़ोतरी करेगा। आप यह रत्न धारण कर शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। यह रत्न आपके भाग्य में वृद्धि कर आपके रुके हुए कार्यों को बना सकता है। मूंगा रत्न आपको कुटुंब सुख, आभूषण, गायन के साथ साथ स्वतंत्र व्यापार में सफलता दे सकता है। रत्न धारण से मंगल बलवान होगा और मंगल की शुभता आपको पूर्ण रूप से प्राप्त होगी।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ॐ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते हैं।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्रमा बारहवें भाव में स्थित है। आपके लिए चंद्र रत्न मोती धारण करना शुभ फलदायक रहेगा। मोती रत्न की शुभता से आप अपने व्ययों पर नियंत्रण रख पायेंगे। भावनात्मक रूप से आप सुदृढ़ होंगे। मोती रत्न आपको विदेश यात्राओं पर रुचि देगा। आपका कार्यक्षेत्र अस्पताल या धार्मिक संस्थान हो सकता है। रत्न प्रभाव से आपको विदेश यात्राओं से उत्तम आय प्राप्त होगी। मोती रत्न शुभता से आप चिंतनशील व्यक्ति बनेंगे। यह रत्न धारण कर आप सकारात्मक विचार वाले व्यक्ति बनेंगे।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में चंद्र दशम भाव के स्वामी है। चंद्र आपके लिए शुभ ग्रह है। चंद्र का मोती रत्न धारण करने से आपको कर्म क्षेत्र में अपनी योग्यता दिखाने के अवसर देगा। रत्न शुभता से आपके स्वास्थ्य में अनुकूलता आ सकती है। आजीविका क्षेत्र से जुड़ी मानसिक चिंताओं का समाधान भी यह रत्न कर सकता है। मोती रत्न आपको राजनीति में अग्रणी रखेगा। मोती रत्न व्यवसायिक सफलता, सूझ-बूझ की योग्यता, मनोविश्लेषक, कलात्मक कार्यों से आय प्राप्त के योग बना सकता है। रत्न शुभता से आपकी धार्मिक प्रवृत्ति का विकास होकर आपको समाजसेवी संगठन या न्यासों के संचालन कार्य से सम्मान दिला सकता है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूठी में, सोमवार को प्रातः काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ॐ सौँ सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते हैं।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु नवम भाव में स्थित है। गुरु रत्न पुखराज धारण करना आपके लिए शुभफल प्रदान करेगा। पुखराज रत्न की शुभता से आप नीतिमान, विचारशील और माननीय व्यक्ति बनेंगे। देवताओं, ब्राह्मणों और गुरुजनों में आपकी श्रद्धा का विस्तार होगा। रत्न शुभता आपको दान-पुण्य कार्यों में सहभागिता देगी। पुखराज रत्न प्रभाव से आप शांत, सदाचारी, और उच्च विचार वाले व्यक्ति बनेंगे। रत्न शक्तियां आपको तीर्थ यात्रा और धार्मिक कार्यों से जोड़े रखेगी। आपको विदेश गमन से लाभ प्राप्त हो सकता है।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में गुरु तृतीयेश एवं षष्ठेश है। गुरु रत्न पुखराज धारण कर आप गुरु शुभता को बढ़ा सकते हैं। पुखराज रत्न की शुभता आपको सेवकों का सुख एवं रोगों से बचाव दे सकती है। रत्न की अद्भुत शक्तियां आपके पुरुषार्थ व सम्मान में वृद्धि दे सकता है। रत्न प्रभाव से आप शत्रुओं पर साहस के साथ विजय प्राप्त कर सकते हैं। पुखराज रत्न आपके संतान सुख को बेहतर करने में उपयोगी साबित हो सकती है। आपको विद्या बुद्धि के प्रयोग से लाभ हो सकते हैं। यह रत्न आपको भाग्य व धर्म के क्षेत्र में भी सामान्य लाभ दे सकता है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूठी में धारण करना चाहिए। पुखराज

रत्न धारण करने के बाद ॐ वृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरूरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थों का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार हैं- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर 8 रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

दशानुसार रत्न विचार

मंगल

(23/07/2019 - 23/07/2026)

मंगल की दशा में आपका नीलम व लहसुनिया रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा, माणिक्य, हीरा, पन्ना, गोमेद, मोती व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

राहु

(23/07/2026 - 22/07/2044)

राहु की दशा में आपका नीलम, गोमेद व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, लहसुनिया व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य, मूंगा व मोती रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु

(22/07/2044 - 22/07/2060)

गुरु की दशा में आपका नीलम व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, माणिक्य, मूंगा, पन्ना, पुखराज, मोती व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

शनि
(22/07/2060 - 23/07/2079)

शनि की दशा में आपका नीलम, पन्ना व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, लहसुनिया व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य, मूंगा व मोती रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध
(23/07/2079 - 22/07/2096)

बुध की दशा में आपका नीलम, पन्ना व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, लहसुनिया, माणिक्य, मूंगा व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(22/07/2096 - 24/07/2103)

केतु की दशा में आपका नीलम, लहसुनिया व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, मूंगा, गोमेद व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य व मोती रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुक्र
(24/07/2103 - 24/07/2123)

शुक्र की दशा में आपका नीलम, पन्ना, गोमेद, हीरा व लहसुनिया रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ

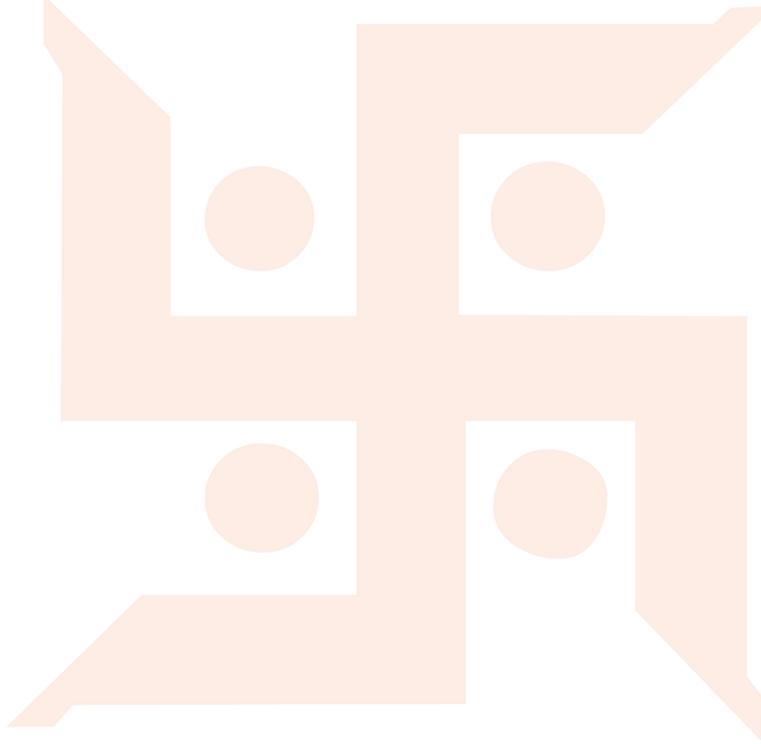
रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य व मोती रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(24/07/2123 - 24/07/2129)

सूर्य की दशा में आपका नीलम व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, मूंगा, गोमेद, मोती, लहसुनिया, पुखराज व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।



शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - ओपल

आपका जन्म तुला राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी शुक्र होता है। शुक्र ज्योतिषशास्त्र में शुभ ग्रह माना जाता है, शुक्र को असुरों का देव भी माना जाता है। सभी विलासिता देने वाला शुक्र ग्रह होता है जो जातक को सभी सुख, समृद्धि और ऐश्वर्य प्रदान करता है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः तुला राशि के लग्न वाले जातकों को तुला राशि के स्वामी ग्रह शुक्र को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। शुक्र ग्रह के लिये ओपल रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात् जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी शुक्र राजा के सलाहकार का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को राज दरबार में सलाहकार तुल्य अधिकार प्राप्त तथा उच्च पदाधिकारी का सहयोग व उनसे सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को अपने जीवन साथी का सहयोग भी प्राप्त होता है। शुक्र ग्रह यौन अंगों एवं यौन सुखों आदि का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको यौन रोग हों या यौन सुख से संबंधित कष्ट हो तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है।

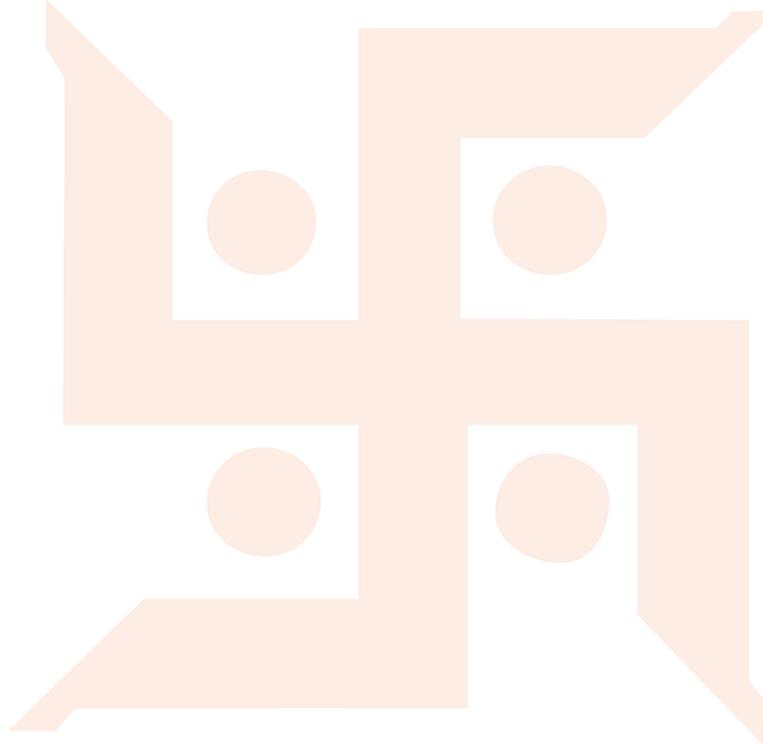
ओपल रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि अनामिका अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में सूर्य की अंगुली मानी जाती है और सभी ग्रह सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाने के कारण उसको ग्रहों का राजा माना जाता है। ओपल रत्न शुक्र का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात् शुक्रवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल शुक्र की होरा में श्रेष्ठ होता है। शुक्रवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय शुक्र की होरा का होता है। ओपल को यदि शुक्रवार के साथ-साथ शुक्र के नक्षत्र अर्थात् भरणी, पूर्वाफाल्गुनी और पूर्वाषाढ़ा में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

ओपल को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पट्टे पर सफेद रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, शुक्र के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण करना चाहिए।

शुक्र का मंत्र - ॐ शुं शुक्राय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि शुक्र से संबंधित पदार्थ जैसे चावल, चांदी, सफेद कपड़ा सवा मीटर का दान करें तो ओपल रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी शुक्र का 108 बार प्रतिदिन स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें या दुर्गा मां की पूजा-स्तुति तथा दुर्गा चालीसा का पाठ करें तो यह ओपल रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक शुक्रवार को दुर्गा सप्तशती का पाठ भी इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

तुला लग्न वाले जातक यदि ओपल रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।



रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहाँ आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ेतरा कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली तुला लग्न की है। तुला लग्न का स्वामी शुक्र होने के कारण आपके व्यक्तित्व में शुक्र का प्रभाव दिखाई देता है। आपका स्वभाव सौम्यता लिये होता है। आप व्यवहार पसंद हैं। वायु तत्व होने के कारण आप अक्सर योजनाएं बनाते हुए मिल जाते हैं परन्तु उन पर क्रियान्वयन नहीं कर पाते। आपको भोग विलास की वस्तुओं का उपभोग करना और खरीदना ज्यादा पसंद हो सकता है। नई टेक्नोलॉजी का स्वागत करते हैं। नये चिन्तन व परीक्षण करने वाले (क्रियटिव) होते हैं और संगीत, गायन, नृत्य, एक्टिंग आदि चीजे पसंद करते हैं।

आप अपनी साज-सज्जा और कपड़ों पर विशेष रूप से ध्यान रखते हैं। आपको वात संबंधी पेशानी अधिक रहती है। आप बहुत जल्दी ही हर माहौल में समझौता कर लेते हैं।

हमेशा आपका अलग ही रूप देखने को मिलता है। आप मे हाजिर जवाब क्षमता अद्भूत है। आप एक जगह टिक कर नहीं बैठ सकते। आदर्शवादी और साहित्यप्रिय होने के कारण आपकी लेखन क्षमता भी अच्छी होती है।

कुंडली के 12 भावों में से 3 भाव विशेष रूप से अशुभ भाव होने के कारण अनिष्ट करने का सामर्थ्य रखते हैं। 6, 8 व 12 वें भाव को त्रिक भावों के नाम से जाना जाता है। तथा त्रिक भावों को शुभ भाव नहीं कहा जाता है। इन भावों का संबन्ध जिन भी ग्रहों व भावेषों से बनता है उनकी शुभता में कमी आती है। कुंडली के आठवें घर से मृत्यु, दुर्घटना, क्लेश, विघ्न, अकाल मृत्यु और परेशानियों का विचार किया जाता है। कुंडली का बारहवां भाव व्यय भाव, हानि भाव, मोक्ष भाव, बंधन भाव तथा शयन भाव के नाम से जाना जाता है। त्रिक भावों में यह सबसे अंतिम भाव है। उपरोक्त विषयों के अलावा इस भाव से कोर्ट कचहरी, अस्पताल, कारावास आदि का विश्लेषण भी किया जाता है। इस भाव में किसी भावेश का बैठना या इस भावेश का किसी ग्रह या भावेश से सम्बन्ध अशुभता समझा जाता है।

इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता है। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

आपके तुला लग्न के लिए गुरु षष्ठेश व तृतीयेश हैं। षष्ठेश व तृतीयेश गुरु आपके धन में अल्पता, ऋणग्रस्तता, संतानविरोधी, न्यायालयों में अधिक व्यय, जीवन साथी से अनबन तथा जीवन में समय समय पर धोखे की स्थिति उत्पन्न कर सकता है।

शुक्र अष्टमेश व लग्नेश है आप चतुराई से धन-संग्रह, कुटुम्बियों से परेशानियां, स्वास्थ्य में न्यूनता दे सकता है। शुक्र अष्टमेश है, इसलिए आपके वैवाहिक सुखों में कमी का कारण बन सकता है। जीवन साथी के प्रति निष्ठावान रहने से गृहस्थ जीवन के कष्टों में कमी कर सकते है।

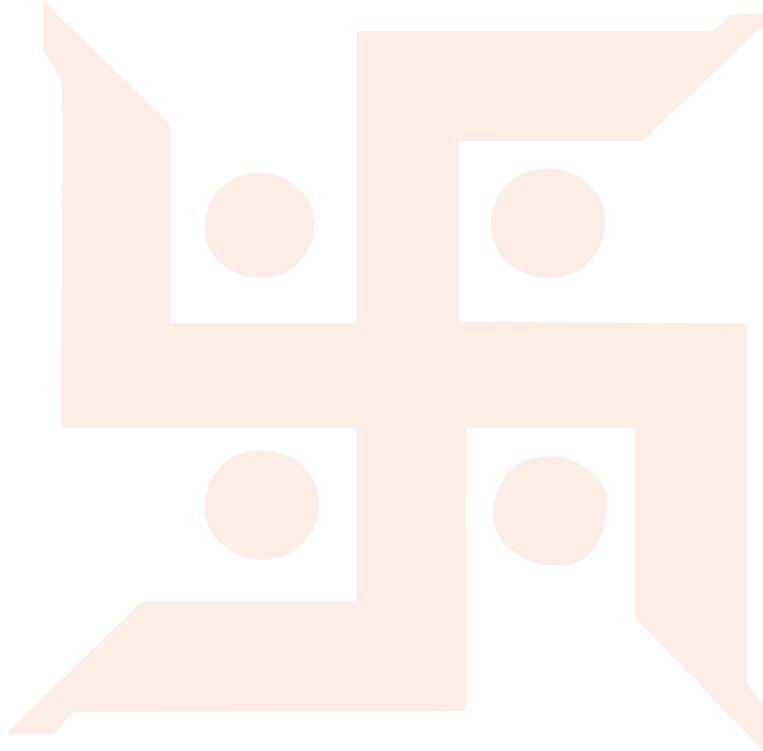
बुध द्वादशेश और नवमेश हैं। नवमेश व द्वादशेश बुध आपके लिए व्यय, हानियों और दंड की स्थिति बना सकते हैं। इसके अतिरिक्त यह आपके विवेक, वाक्शक्ति, भाग्य, धर्म, यश में कमी भी करेंगे। आपमें तुरन्त निर्णय की क्षमता, न्यायालयों पर व्यय, राज्य व भाग्य के क्षेत्र में हानि दे सकता है।

चन्द्र द्वादश भाव में आपको बचपन में रोगी, कष्टों को सहने वाला, शत्रुओ की अधिकता, धन-हानि, असत्य वक्ता बना सकता है। स्वास्थ्य के पक्ष से भी चन्द्र की यह स्थिति शुभ फलदायी नहीं है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 2, 4, 5, 6 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण

कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।



साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती तृतीय ढैया	11/08/2013-02/11/2014	-----	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती तृतीय ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	30/08/2068-04/11/2070	-----	-----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती तृतीय ढैया	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	16/01/2076-11/07/2076	11/10/2076-15/01/2079	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	21/05/2086-21/05/2086	08/02/2087-18/07/2088	31/10/2088-05/04/2089
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	18/08/2095-11/10/2097	02/05/2098-20/06/2098	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	11/10/2097-02/05/2098	20/06/2098-26/12/2099	17/03/2100-16/09/2100

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया

फल

शुभ
शुभ
सम
सम
अशुभ

क्षेत्र

स्वास्थ्य
पराक्रम
दाम्पत्य कलह
अल्प बचत
कम खर्च

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

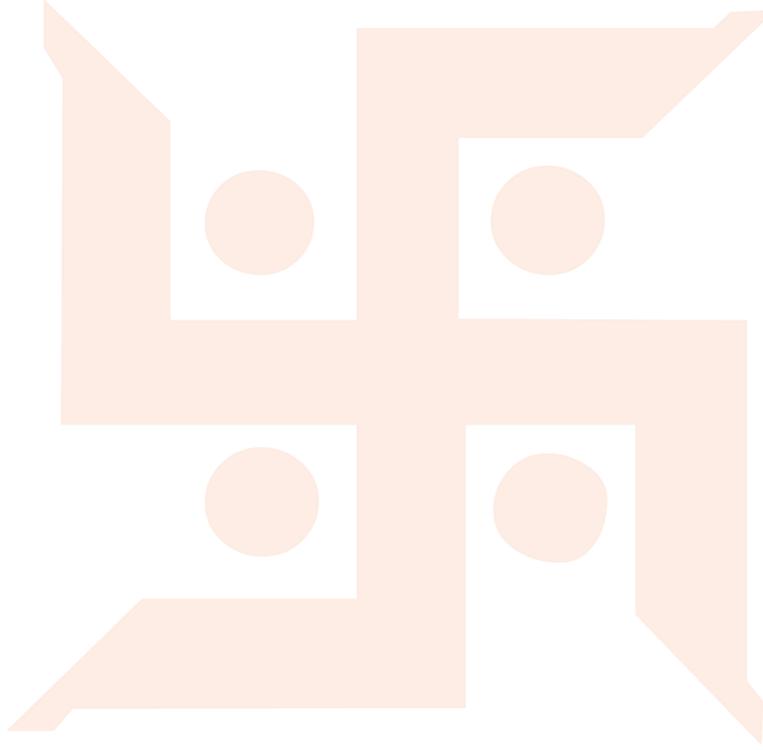
मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति नवम भाव में है। यह भाव भाग्य एवं धर्म का प्रतिनिधि भाव है। अतः इसके प्रभाव से आप भाग्य पर अल्प मात्रा में ही विश्वास करेंगी तथा कर्म पर विशेष ध्यान देंगी। आपके विचार से कर्म के बिना भाग्योदय नहीं होता। अतः अपने इस सिद्धांत से आप जीवन में कर्म के द्वारा हमेशा उन्नति मार्ग प्रशस्त करने में सफल रहेंगी। साथ ही धर्म के प्रति आपकी रुचि अल्प मात्रा में रहेगी तथा धार्मिक कार्य कलापों एवं तीर्थ स्थानों की यात्रा भी आप कम ही सम्पन्न करेंगी। आयु के साथ साथ जीवन में भाग्य एवं धर्म के महत्व को भी स्वीकार करेंगी। समाज में आपको विशिष्ट सम्मान की प्राप्ति की संभावना भी रहेगी। आप उत्साह एवं पराक्रम से अपने कार्यों को सम्पन्न करने में सर्वदा तत्पर रहेंगी।

नवम भाव से द्वादश भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप अधिक मात्रा में व्यय करेंगी तथा यह व्यय शुभाशुभ दोनों प्रकार से होगा। साथ ही जमीन जायदाद आदि पर आप अधिक से अधिक व्यय करना पसन्द करेंगी तथा इसमें आपको प्रचुर मात्रा में लाभ भी होगा। यद्यपि इसके प्रभाव से जीवन में अनावश्यक विघ्न बाधाएं भी आएंगी परन्तु उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगी। दाम्पत्य जीवन का आप प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगी। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि से आपके पराक्रम में वृद्धि होगी। समाज में सभी लोग आपके प्रभाव एवं पराक्रम को स्वीकार करेंगे जिससे आपको इच्छित मान सम्मान की प्राप्ति होगी। साथ ही भाई बहनों का भी न्यूनाधिक सुख एवं सहयोग समय समय पर मिलता रहेगा। चतुर्थ भाव पर इसकी दृष्टि से आप जमीन जायदाद तथा वाहन आदि सुख से युक्त रहेंगी तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगी। सांसारिक सुख संसाधनों को भी आप परिश्रम पूर्वक प्राप्त करेंगी लेकिन माता का सुख तथा स्वास्थ्य मध्यम रहेगा।

इस प्रकार मंगल के इस प्रभाव के कारण आप परिश्रम एवं पराक्रम से कर्म की

महत्ता को प्रमुखता देते हुए अपना भाग्योदय स्वयं करेंगी जिससे आपका परिवार खुशहाल रहेगा तथा दाम्पत्य जीवन में भी मधुरता रहेगी। पारिवारिक जनों को यथोचित सुख सुविधाएं प्रदान करने में आप सफल रहेंगी।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में अनन्त नामक कालसर्प योग विद्यमान है। परिणामस्वरूप वैवाहिक जीवन कष्टमय व्यतीत होता है। घर में सुख शान्ति का अभाव रहता है। अपने रिश्तेदार समय-समय पर नुकसान पहुँचाते रहते हैं। सामाजिक मान-सम्मान का अभाव रहता है।

इस योग के प्रभाव से जातक को व्यक्तित्व निर्माण के लिए विशेष रूप से संघर्ष करना पड़ता है। जातक अपने कार्य को अनेक बार परिवर्तित करता है। परिणामस्वरूप केवल नुकसान ही उठाना पड़ता है। खासकर साहूकारी के व्यवसाय में अत्यधिक नुकसान होता है। इस योग के कारण जातक नीचकर्म करने में तत्पर हो जाता है। आगे बढ़ने के लिए किये गये प्रयास में अक्सर असफलता ही हाथ लगती है। जीवन में अनेक प्रकार की समस्याएँ आती रहती हैं। जिससे जातक को समय-समय पर नुकसान उठाना पड़ता है एवं चन्द्रमा के प्रभावित होने के कारण जीवन मानसिक रूप से अशान्त रहता है। इस योग के प्रभाव से जातक आलसी तथा पराक्रमहीन हो जाता है एवं जातक को कभी कोई सजा भी मिल सकती है। जीवन में रोग व्याधि ग्रसित करती रहती हैं। जिसमें अधिक पैसे खर्च हो जाने के कारण आर्थिक विपन्नता आ जाती है। परिणामस्वरूप जातक कर्ज में डूब जाता है एवं शत्रुओं के षड्यन्त्रों में फंसा हुआ रहता है और उन लोगों से नुकसान ही प्राप्त होता है। लेकिन सब कुछ होने के बावजूद भी जातक के जीवन में एक अच्छा समय आता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. 16 सोमवार का व्रत करें।
3. राहु मन्त्र का 18000(अठारह हजार) उनकी महादशा, अन्तर्दशा में करें या करवायें।
4. शुभ मुहूर्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
5. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
6. नव नाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
7. श्रावण मास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. तिरुपति बालाजी के समीप कालहस्ती शिवमन्दिर में जाकर कालसर्प योग की शान्ति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें।
9. श्रद्धापूर्वक पितरों का प्रतिवर्ष श्राद्धपक्ष में श्राद्ध करें। कम से कम सात वर्ष तक अवश्य करें।
10. सरस्वती जी की एक वर्ष तक विधिवत उपासना करें।
11. गोमेद, तिल, सरसों, कम्बल, खड़्ग, नीलवस्त्र, शूर्प आदि समय समय पर दान करें।

12. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबालकर राहु की महादशा या अन्तर दशा आदि में सवा महीने तक स्नान करें।

13. शुभ मुहूर्त में नागपाश यन्त्र को अभिमन्त्रित कर धारण करें।

14. शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से यह व्रत आरंभ करना चाहिए। यह व्रत 18 करें। काला वस्त्र धारण करके 18 या 3 बीज मन्त्र की माला जपें। तदन्तर एक बर्तन में जल, दूर्वा और कुश लेकर पीपल की जड़ में डालें। भोजन में मीठा चूरमा, मीठी रोटी समयानुसार रेवड़ी, भुग्गा, तिल के बने मीठे पदार्थ सेवन करें और यही दान में भी दें। रात को घी का दीपक जलाकर पीपल की जड़ में रख दें।

15. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वास्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।

16. मंगलवार एवं शनिवार को रामचरितमानस के सुन्दरकाण्ड का 108 बार पाठ श्रद्धापूर्वक करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम भाव का स्वामी शनि है तथा उस पर राहु का प्रभाव है।
- नवम भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुण्डली में बुध और शनि के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें।

आपकी कुण्डली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांड़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

दशमभाव में सूर्य हो तो जातक-प्रतापी, व्यवसाय कुशल, राजमान्य लब्ध-प्रतिष्ठ, राजमन्त्री, उदार, ऐश्वर्य सम्पन्न एवं लोकमान्य होता है।

कर्कराशि में रवि हो तो जातक कीर्तिमान, लब्धप्रतिष्ठ, कार्यपरायण, चंचल, साम्यवादी, कफरोगी, इतिहासज्ञ एवं परोपकारी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी पूर्ण रहेगी। धनैश्वर्य से वे सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में आपको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही आपके आजीविका या व्यापार संबंधी कार्य भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहायता से सम्पन्न होंगे एवं आप इन कार्यों में वांछित सफलता अर्जित कर सकेंगी।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध प्रायः मधुर ही रहेंगे तथापि यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। जीवन में आप पिता को अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक सहायता प्रदान करेंगी एवं सुख दुःख में सर्वदा उनका सहयोग करेंगी।

चन्द्र

बारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक मृदुभाषी, चिन्ताशील, एकात्प्रिय, क्रोधी, कफरोगी, चंचल, नेत्ररोगी एवं अधिक व्यय करने वाला होता है।

कन्या राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सुन्दर, रूपवान, धनी ईमानदार, मधुरभाषी, सदाचारी, धीर, विद्वान, सुखी, सुन्दर वक्ता अधिक कन्या सन्तान वाला, ज्योतिष एवं कला प्रेमी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति करती रहेंगी। आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव भी विद्यमान रहेगा। साथ ही जीवन के सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा निर्देश देती रहेंगी। दान पुण्य संबंधी कार्य में भी आप उन्हीं का अनुसरण करेंगी।

आपका भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं प्रायः उनकी आज्ञा का पालन करती रहेंगी परन्तु आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं रहेंगे तथा यदा कदा किसी न किसी बात पर विवाद होता रहेगा परन्तु ये सामान्य मतभेद स्वतः समाप्त हो जाएंगे एवं सामान्य संबंध बने रहेंगे। समय ही उन्हें हमेशा अपना वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगी।

मंगल

नौवें भाव में मंगल हो तो जातक अभिमानी, क्रोधी, नेता, द्वेषी, अल्पलाभ करने वाला, यशस्वी, असन्तुष्ट, भातृविरोधी, अधिकारी एवं ईर्ष्यालु होता है।

मिथुन राशि में मंगल हो तो जातक शिल्पकार, परदेशवासी, कार्यदक्ष, सुखी, जनहितैषी, विद्वान, बलवान शरीर, कवि, संगीतकार, नीतिज्ञ, कुशाबुद्धिवाला एवं चतुर होता है।

आपकी जन्मकुण्डली में मंगल की स्थिति नवम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा वे शारीरिक अस्वस्थता की भी अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा एवं यत्नपूर्वक जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी भाग्योन्नति करते रहेंगे। साथ ही आपकी सहायता करते रहेंगे। साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी उनकी मुख्य भूमिका रहेगी एवं सुख दुःख में सर्वदा पूर्ण सहयोग रहेगा।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु आपसी मतभेदों के कारण यदा कदा कटुता का वातावरण भी बनेगा लेकिन यह अल्प समय के लिए रहेगा। इसके अतिरिक्त आप सुख दुःख में उनका पूर्ण सहयोग करेंगी एवं समयानुसार वांछित आर्थिक सहायता भी प्रदान करेंगी।

बुध

दशमभाव में बुध हो तो जातक सत्यवादी, मनस्वी, व्यवहार कुशल, लोकमान्य, विद्वान, लेखक, कवि जमींदार, मातृ-पितृ भक्त, राजमान्य, न्यायी एवं भाग्यवान् होता है।

कर्क राशि में बुध हो तो जातक नीतिकुशल, सूक्ष्माही, अत्यन्त कामुक, छोटकदवाला, अनैतिक चरित्र, अनिश्चित स्वभाव, वाचाल, गवैया, परदेशवासी, प्रसिद्ध एवं परिश्रमी होता है।

गुरु

नवमभाव में गुरु हो तो जातक पराक्रमी, धर्मात्मा, पुत्रवान, बुद्धिमान, राजपूज्य, तपस्वी, विद्वान्, योगी, वेदान्ती, यशस्वी, भक्त, भाग्यवान् संन्यास की ओर प्रवृत्ति एवं प्रचुर सन्तान होता है।

मिथुन राशि में गुरु हो तो जातक योग्य वक्ता, सुगठित शरीर, लम्बाकद, उदार, विद्वान, कई भाषाओं का जानने वाला, अनायास धनप्राप्त करने वाला, लोकमान्य, लेखक एवं व्यवहार कुशल होता है।

शुक्र

ग्यारहवें भाव में शुक्र हो तो जातक परोपकारी, लोकप्रिय, जौहरी, विलासी, वाहनसुखी, स्थिरलक्ष्मीवान्, धनवान् गुणज्ञ, कामी एवं पुत्रवान् होता है।

सिंह राशि में शुक्र हो तो जातक, अल्पसुखी उपकारी, चिन्तातुर, शिल्पज्ञ, स्त्रियों के द्वारा धन अर्जित करने वाला, कामुक, आवेशपूर्ण एवं अपने को दूसरों से ऊँचा समझने वाला होता है।

शनि

लग्न (प्रथम) में शनि मकर, कुम्भ तथा तुला का हो तो धनाढ्य, सुखी, धनु और मीन राशियों में हो तो अत्यन्त धनवान् और सम्मानित एवं अन्य राशियों का हो तो अशुभ होता है।

तुला राशि में शनि हो तो जातक राजनीति में रुचि रखने वाला, प्रसिद्धनेता, धनी, सम्मानित शक्तिशाली, दानशील, परस्त्रियों में रुचि, सुभाषी, यशस्वी, स्वाभिमानी एवं उन्नतिशील होता है।

राहु

लग्न (प्रथम) में राहु हो तो जातक कामी, दुर्बल, मनस्वी, अल्पसन्तति युक्त, राजद्वेषी, नीचकर्मरत दुष्ट, स्तकरोगी, स्वार्थी एवं बात-बात पर सन्देह करने वाला होता है।

तुला राशि में राहु हो तो जातक अल्पायु, दाँतों के रोग, विरासत में धन पाने वाला एवं कार्य कुशल होता है।

केतु

सप्तम भाव में केतु हो तो जातक मतिमन्द, मूर्ख, दुखद विवाहित जीवन, पति-पत्नी में सम्बन्ध विच्छेद, शत्रुभीरु एवं सुखहीन होता है।

मेष राशि में केतु हो तो जातक चंचल, बहुभाषी एवं सुखी होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। सामान्यतया तुला लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ सुन्दर एवं आकर्षक व्यक्तित्व के महिला होते हैं तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ रहते हैं। इनकी प्रवृत्ति हास्य प्रिय होती है तथा बच्चों के प्रति निश्चल प्रेम के भाव को मन में रखते हैं। सुन्दर वस्तुओं या दृश्यों को देखना इनको रुचिकर लगता है ये स्वभाव से ही अन्य जनों को कष्ट न देने वाले होते हैं तथा सभी लोगों से समानता का व्यवहार करते हैं फलतः सामाजिक जनों के मध्य इनकी प्रतिष्ठा बनी रहती है एवं यश भी प्राप्त होता है। कला के प्रति इनका भावनात्मक लगाव रहता है तथा इस क्षेत्र में परिश्रम एवं बुद्धिमता से धनैश्वर्य एवं प्रसिद्धि भी प्राप्त करते हैं। नीति के ये ज्ञाता होते हैं। अतः राजनीति के क्षेत्र में इनको नेतृत्व आदि की भी प्राप्ति हो जाती है लेकिन इनका कोई एक सिद्धांत नहीं होता तथा समयानुसार सिद्धांतों को परिवर्तित करते हैं। अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय रहेगा तथा अपने आकर्षक व्यक्तित्व से अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ होंगी। प्राकृतिक सुन्दरता के प्रति भी आकर्षित रहेंगी तथा समयानुसार इन दर्शनीय क्षेत्रों का भ्रमण भी कर सकती हैं। कला के प्रति आपकी तीव्र रुचि रहेगी तथा इस क्षेत्र में आप उन्नति भी प्राप्त कर सकते हैं।

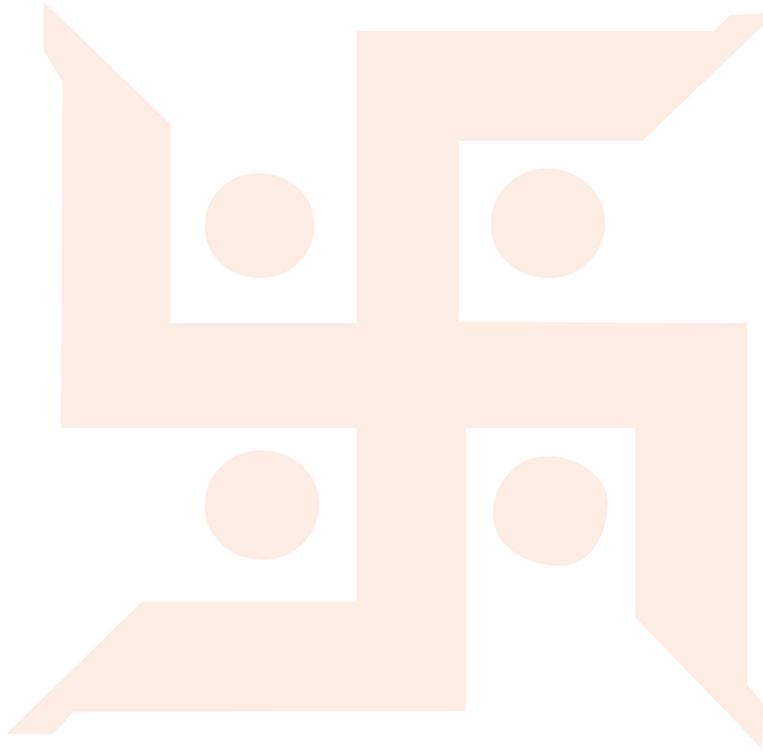
सामाजिक जनों के मध्य आपका समानता का व्यवहार रहेगा तथा किसी प्रकार का भेद भाव नहीं रखेंगी। कार्यक्षेत्र में भी आप प्रभावशाली होंगी जिससे अधिकारी तथा सहयोगी आपसे प्रसन्न रहेंगी फलतः आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगी तथा धनैश्वर्य एवं वैभव सुख संसाधनों को अर्जित करके प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगी।

लग्न में राहु के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु मानसिक उद्विग्नता यदा कदा विद्यमान रहेगी। अपने समस्त सांसारिक शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को आप परिश्रम एवं बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगी जिससे आपके उन्नतिमार्ग प्रशस्त होंगे। साथ ही भौतिकता के प्रति आपके मन में विशेष आकर्षण रहेगा। कार्यों को करने में आप अत्यंत ही दक्षता का परिचय देंगी तथा व्यावहारिक कुशलता के द्वारा अन्य जनों को प्रभावित करेंगी। आप यत्नपूर्वक सत्कर्मों के द्वारा अपनी आजीविका अर्जित करेंगी। अर्थिक दृष्टि से आप सुदृढ़ रहेंगी तथा आय स्रोतों में वृद्धि करके इच्छित धन एवं वैभव प्राप्त करेंगी।

आप में विद्वता का भाव भी विद्यमान होगा तथा कला एवं संगीत के प्रति रुचिशील रहेंगी तथा परिश्रम एवं योग्यता से इस क्षेत्र में उन्नति करेंगी। अवसरानुकूल राजनीति में भी आप सक्रिय होंगी तथा अन्य जनों के सहयोग से इस क्षेत्र में अपनी पहचान बनाने में समर्थ रहेंगी।

धर्म के प्रति आपकी रुचि अवश्य रहेगी परन्तु धार्मिक कार्यकलापों या अनुष्ठानों को अल्प मात्रा में ही सम्पन्न करेंगी परन्तु गंगास्नान या तीर्थ यात्रा आपकी होती रहेगी। मित्र वर्ग में आप आदरणीय तथा प्रिय रहेंगी तथा इनसे आप इच्छित लाभ एवं सहयोग समय समय पर प्राप्त करेंगी। इस प्रकार आप विदुषी उत्साही परिश्रमी एवं पराक्रमी महिला होकर सुख

संसाधन अर्जित करके उनका उपभोग करेंगी ।



धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में वृश्चिक राशि उदित हुई है जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में स्व प्रयत्न एवं परिश्रम से धनार्जन करने में सफलता प्राप्त करेंगी। साथ ही पैतृक सम्पत्ति भी आपको अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगी परन्तु बहुमूल्य रत्न एवं धातुओं को अर्जित करने में समर्थ रहेंगी। आप भूमि या जायदाद संबंधी क्रय विक्रय या संबंधित कार्यों से भी लाभ अर्जित कर सकती हैं। साथ ही कृषि या बागवानी संबंधी कार्यों में भी आपकी रुचि रहेगी। आप एक महत्वाकांक्षी महिला होंगी तथा जीवन में परिवार के सहयोग से इच्छित उन्नति एवं सम्मान अर्जित करने में समर्थ रहेंगी लेकिन विषम परिस्थितियों का सामना करने में आप स्वयं असमर्थ समझेंगी।

पारिवारिक जनों की प्रसन्नता तथा सुविधा के लिए सुख संसाधनों के लिए आप सतत प्रयत्नशील रहेंगी। साथ ही उनकी सन्तुष्टि के लिए अधिक मात्रा में व्यय भी करेंगी। आपकी वाणी प्रभावशाली रहेगी तथा अन्य जनों को अपनी तर्क पूर्ण बातों से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगी तथा अधिकांश लोग आपसे सहमत भी रहेंगे। मिष्टान की आप प्रिय रहेंगी तथा रुचि पूर्वक इसका भक्षण करके प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी परन्तु प्रौढ़ावस्था में आप नेत्र संबंधी कष्ट प्राप्त कर सकती हैं। इसके अतिरिक्त धार्मिक परंपराओं का आप पूर्ण पालन करेंगी तथा शुभ एवं मंगल कार्यों को समय समय पर सम्पन्न करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त सज्जन लोगों के प्रति आपके मन में हमेशा आदर का भाव बना रहेगा।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्मसमय में चतुर्थ भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आप समस्त सांसारिक एवं भौतिक सुखों को प्राप्त करने में समर्थ होंगी। आपको आधुनिक सुख-संसाधनों की भी प्राप्ति होगी जिसका सुखपूर्वक उपभोग करेंगी। आप एक समृद्ध एवं वैभवशाली महिला होंगी तथा समाज में आदरणीय महिला मानी जाएंगी।

आप एक सौभाग्यशाली महिला होंगी तथा चल एवं अचल सम्पत्ति से युक्त होकर उसके स्वामित्व को प्राप्त करेंगी। विवाह के बाद पति के प्रभाव या सहयोग से भी आपको वांछित चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। इससे आपकी समृद्धि में वृद्धि होगी तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से आपको समय समय पर धन सम्पत्ति की प्राप्ति होती रहेगी। आप चल एवं अचल दोनों प्रकार की सम्पत्ति से युक्त होंगी। अतः इन पर आप इच्छित निवेश कर सकती है।

जीवन में आपको उत्तम घर की प्राप्ति होगी तथा यह विस्तृत क्षेत्र में होगा तथा आधुनिक सुख-सुविधाओं एवं उपकरणों से सुसज्जित रहेगा। आप भी व्यक्तिगत रूप से इसके आकर्षण एवं सुन्दरता बनाए रखने के लिए प्रयत्नशील होंगी। आपका घर किसी समृद्ध कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी बुद्धिमान एवं शिक्षित होंगे एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी। इसके अतिरिक्त उत्तम वाहन से भी आप युक्त होंगी तथा इनकी संख्या एक से अधिक भी हो सकती है।

आपकी माताजी सुन्दर, शिक्षित, बुद्धिमान एवं आधुनिक विचारों की महिला होंगी तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। वह एक व्यवहार कुशल महिला होंगी तथा पारिवारिक सदस्यों का ध्यान से लालन पालन करेंगी जिससे सभी लोग उनको वांछित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष वात्सल्य का भाव होगा तथा समय समय पर उनसे आपको वांछित आर्थिक एवं नैतिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। आपकी उन्नति में भी उनका मुख्य योगदान होगा। आप भी उनके प्रति श्रद्धा एवं आज्ञाकारिता का भाव रखेंगी तथा सुख-दुःख में उन्हें अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी इससे आपसी संबंधों में भी मधुरता बनी रहेगी।

विद्याध्ययन में आपकी प्रारंभ से ही रुचि होगी तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से आप छोटी कक्षाओं से ही अच्छे अंक लेकर परीक्षाएं उत्तीर्ण करेंगी। स्नातक परीक्षा भी आप संतोष जनक रूप से उत्तीर्ण करेंगी। इससे आपके मन में उत्साह के भाव में वृद्धि होगी तथा भविष्य में भी उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होने के लिए स्वयं को तैयार करेंगी। स्वजनों एवं संबंधियों से भी आप वांछित आदर, स्नेह एवं प्रोत्साहन प्राप्त करेंगी।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान महिला होंगी तथा आपके सभी कार्य-कलापों में उत्कृष्ट बुद्धिमता की छाप होगी। इससे सभी लोग आपसे प्रभावित होंगे तथा आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आप में सही समय में तत्काल सही निर्णय लेने की शक्ति भी विद्यमान होगी जिससे समान्यतया कार्यों में आपको सिद्धि प्राप्त होगी वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्म में आपकी पूर्ण रुचि होगी तथा उनके ज्ञानार्जन से सामाजिक प्रभाव में वृद्धि करेंगी। संगीत कला एवं कविता तथा पाश्चात्य साहित्य के प्रति आपकी ज्ञानार्जन की इच्छा होगी तथा स्वपरिश्रम से इस क्षेत्र का न्यूनाधिक ज्ञान अर्जित करने में समर्थ होंगी।

पंचमभाव में कुम्भ राशि के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में आपकी विशेष रुचि होगी तथा मनोरंजन शान्ति एवं आत्म सन्तुष्टि के लिए आप प्रेम-प्रसंग स्थापित करेंगी। आपके प्रेम में भौतिक तथा भावात्मक दोनों प्रकार का आकर्षण विद्यमान होगा। अतः इस क्षेत्र में आपको मर्यादा तथा नैतिकता का अवश्य ध्यान रखना चाहिए जिससे अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना न करना पड़े।

जीवन में आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा कन्या संतति अधिक होगी। आपकी संतति बुद्धिमान योग्य एवं पराक्रमी होगी तथा इन्हीं गुणों से जीवन में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना होगी तथा उनकी आज्ञा का पालन भी करेंगे। शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को वे माता-पिता की सलाह से सम्पन्न करेंगे। इससे आपस में सद्भाव एवं विश्वास का भाव बना रहेगा। पिता की अपेक्षा माता के प्रति बच्चों का विशेष अपनत्व का भाव होगा एवं अपनी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान वे माता के माध्यम से ही सम्पन्न करेंगी लेकिन आदर का भाव दोनों के प्रति समान होगा। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में माता-पिता की तन-मन-धन से सेवा करेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। अतः इस संदर्भ में आप भाग्यशाली महिला होंगी।

अध्ययन के क्षेत्र में आपकी संतति योग्य सिद्ध होगी तथा प्रारंभ से ही वे अध्ययन के क्षेत्र में विशेष उन्नति एवं सफलताएं अर्जित करेंगे। आप भी उनकी शिक्षा का पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा उसमें आवश्यक व्यय करके आधुनिक परिवेश में उन्हें शिक्षा दिलाएंगी। वे भी स्वभाव से मृदु, सुन्दर, सक्रिय एवं व्यवहार कुशल होंगी तथा अन्य जनों को अपने कार्य कलापों तथा बुद्धिमता से प्रभावित एवं प्रसन्न रखेंगे जिससे वे वांछित स्नेह तथा सम्मान प्रदान करेंगे। इससे आपकी सामाजिक मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा संतति पर आप गौरवान्वित होंगी।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है तथा केतु भी सप्तम भाव में ही स्थित है। सामान्यतया सप्तम भाव में मेष राशि की स्थिति से जातक का सहयोगी तेजस्वी पराक्रमी एवं धनाढ्य होता है एवं केतु के प्रभाव से उसमें उग्रता के भाव की उत्पत्ति होती है लेकिन सांसारिक कार्यों को करने में दक्ष होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपके पति तेजस्वी स्वभाव के व्यक्ति होंगे। सांसारिक कार्य कलापों को वह चतुराई से सम्पन्न करेंगे तथा उनके साहसिक कार्यों से अन्य लोग भी उनसे प्रभावित होंगे। भौतिकता की ओर भी उनकी रुचि रहेगी तथा आधुनिक सुख संसाधनों को अर्जित करने के लिए तत्पर रहेगे। केतु के प्रभाव से कर्तव्य परायणता भी उनमें होगी जिससे परिवार एवं समाज के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करेंगे।

आपके पति लालिमा लिए गौरवर्ण के व्यक्ति होंगे तथा कद भी मध्यम रहेगा। शारीरिक सौन्दर्य उनका दर्शनीय होगा एवं शरीर में पुष्टता एवं सुडौलता होंगी जिससे उनके आकर्षण में वृद्धि होगी तथा व्यक्तित्व में निखार आएगा। केतु के प्रभाव से पाक शास्त्र में उनकी रुचि होगी तथा यदा कदा उनके द्वारा बनाएं गए स्वादिष्ट भोजन से सभी लोग प्रभावित होंगे।

सप्तम भाव में केतु के प्रभाव से यद्यपि विवाह में कुछ विलम्ब होगा परन्तु अनावश्यक व्यवधान नहीं होंगे। आपका विवाह बंधु, संबंधी या विज्ञापन के माध्यम से सम्पन्न होगा। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथा एक दूसरे के प्रति मन में प्रेम तथा सदभाव होगा। साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यों को एक दूसरे की सलाह एवं सहमति से पूर्ण करेंगे जिससे समानता एवं विश्वसनीयता बनी रहेगी परन्तु पति के उग्रस्वभाव से यदा कदा संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा। अतः ऐसे समय पर संयम से व्यवहार करना चाहिए।

आपका विवाह किसी प्रतिष्ठित परिवार में होगा तथा सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से उनकी स्थिति अच्छी रहेगी। विवाह के बाद सास ससुर से आपके औपचारिक संबंध रहेंगे तथापि अवसरानुकूल उनसे आपको नैतिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी।

सास ससुर के प्रति आपके पति का सेवा भाव अल्प ही रहेगा तथा सुख दुख में वह उनका विशेष ध्यान नहीं रखेंगे। साले एवं सालियां भी उनकी तेजस्विता एवं कटुवाणी से अप्रसन्न रहेंगे तथा उन्हें यथोचित सम्मान एवं सहयोग नहीं देंगे।

व्यापार या किसी महत्वपूर्ण कार्य में साझेदारी के लिए स्थिति विशेष अनुकूल नहीं रहेगी। अतः यदि अत्यावश्यक न हो तो साझेदारी की उपेक्षा ही करनी चाहिए।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशम भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। साथ ही सूर्य भी दशम भाव में ही स्थित है। कर्क राशि जलतत्व एवं सूर्य अग्नि तत्व प्रधान है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा समय समय पर आप इसमें परिवर्तन भी करती रहेंगी। साथ ही ऐसे सामयिक परिवर्तनों से आपको प्रचुर मात्रा में लाभ होगा तथा आप मानसिक सन्तुष्टि की भी अनुभूति करेंगी।

दशमभाव में एकादशेश सूर्य की कर्क राशि में स्थिति के प्रभाव से आजीविका की दृष्टि से आपके लिए सरकारी सेवा, जल एवं जहाजरानी विभाग, ऊर्जा एवं शक्ति विभाग, औषधि विज्ञान, प्रशासकीय सेवा, प्रतियोगिता द्वारा किसी अधिकार प्राप्त पद, एवं विज्ञान में शोध का क्षेत्र आपके लिए शुभ एवं अनुकूल रहेगा। इन क्षेत्रों में आप वांछित उन्नति एवं सफलता प्राप्त करेंगी तथा किसी विशिष्ट उपलब्धि या सम्मान से भी सुशोभित होंगी। अतः यत्नपूर्वक आपको उपरोक्त क्षेत्रों एवं विभागों में ही अपनी आजीविका स्थल का चयन करना चाहिए। इससे आप बिना किसी समस्या एवं व्यवधानों के उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगी।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए कैमिस्ट, द्रव पदार्थों का व्यापार, दूध दही घी मूल्यवान वस्त्रों का उत्पादन या आयात निर्यात, रत्न संबंधी कार्य, इंजीनियरिंग उपकरण, कलात्मक क्षेत्र सरकार से संबधित ठेके या संस्था आदि का संचालन तथा एंजेंसी आदि से वांछित लाभ एवं धन की प्राप्ति होगी तथा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगी। साथ ही इसमें आपको अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा।

दशमभाव में सूर्य के प्रभाव से जीवन में आपको वांछित मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को भी आप अपनी योग्यता एवं परिश्रम से अर्जित करने में समर्थ होंगी। समाज में आपका पूर्ण प्रभाव होगा तथा सभी लोग आपको यथोचित सम्मान एवं आदर प्रदान करेंगे। साथ ही किसी सामाजिक एवं शैक्षणिक संस्था के भी आप कोई उच्चाधिकारी हो सकती हैं। इससे आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा दूर दूर तक यश भी व्याप्त होगा।

आपके पिता तेजस्वी पराक्रमी योग्य एवं शिक्षित व्यक्ति होंगे तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। साथ ही अन्य जन भी उनके कार्य कलापों से प्रभावित होंगे तथा उन्हें वांछित मान सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह का भाव होगा तथा उच्च शिक्षा का यथोचित प्रबंध करेंगे। आपके कार्यक्षेत्र में उन्नति या सफलता में भी उनका विशेष योगदान होगा। आप भी अपनी बुद्धिमता एवं परिश्रम से अपने कार्यक्षेत्र में उन्नति करेंगी तथा पिता के मान सम्मान में वृद्धि करेंगी। आपके परस्पर संबंधों में मधुरता होगी तथा वैचारिक एवं सैद्धान्तिक समानता भी होगी। इसके अतिरिक्त सांसारिक महत्व के कार्यों को एक दूसरे के सहयोग से सम्पन्न करेंगे जिससे आपका जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि छटे भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु पंचम भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमेंचतुर्थ भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरुनवम भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमेंदशम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशि एवं एकादशभाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत बढ़िया रहेगा। आप अपने भाग्य के द्वारा व्यवसाय में उन्नति करेंगे। गुरु एवं शनि ग्रह का अनुकूल स्थान में होने से आपका चौमुखी विकास होगा। आय के मार्ग प्रशस्त होंगे। उच्च अधिकारियों या वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। जिससे आपके कार्य क्षेत्र में सफलता का प्रतिशत और बढ़ सकता है।

02 मई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ-साथ इच्छित स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है। भूमि से सम्बन्धित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष शुभ फलदायक रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता होने के कारण इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आप भौतिक सुख सुबिधा पर भी खर्च करेंगे। बच्चों की स्वास्थ्य संबंधित परेशानी पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

02 जून के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन के साथ रत्न आभुषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों केमांगलिक कार्यों में भी धन का व्यय होगा। 31 अक्टूबर के बाद धनागम में वृद्धि होगी। जिससे आप आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में सफल रहेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। व्यापारिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगेपरन्तु आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से सामाजिक उत्थान के लिए आपका पूर्ण प्रयास रहेगा।

02 जून के बाद पारिवारिक रूप से समय और भी अनुकूल हो रहा है। आपके परिवार में परस्पर सहयोग एवं भावनात्मक प्रेम में वृद्धि होगी। परिवार के सभी सदस्यों का सहयोग प्राप्त होगा और आपसी आकर्षण भी बढ़ेगा। पिताजी के लिए यह समय काफी अच्छा रहेगा। मालुत पक्ष के साथ आपके संबंध मधुर होंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष बहुत अच्छा नहीं रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपके बच्चे को सफलता प्राप्त के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। दूसरी संतान के लिए समय अच्छा है। उसकी उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे।

02 जून के बाद समय अधिक प्रभावित हो रहा है। उस समय पंचमस्थ राहु संतान संबंधित परेशानि उत्पन्न कर सकता है। गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो सकता है। इस समय के अंतराल में बच्चे के स्वास्थ्य से संबंधित कोई भी लापरवाही नहीं करनी चाहिए। 31 अक्टूबर के बाद आपके बच्चों का उन्नति होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। नवमस्थ गुरु की पंचम दृष्टि लग्न पर होगी उसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत है। मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में स्वास्थ्य के प्रति ध्यान देना आवश्यक होगा। खाने-पीने की वस्तुओं में परहेज रखें। कभी कभी स्वस्थ रहते हुए भी कमजोरी जैसा अनुभव होता रहेगा। रात को जल्दी सोना और सुबह जल्दी उठकर घूमना आपके शरीर के लिए लाभदायक रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी करने वाले जातकों को सफलता प्राप्त होगी। जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं उनको नौकरी मिल सकती है। तकनीकी शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा के लिए भी यह समय श्रेष्ठतम रहेगा।

02 जून के बाद विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान का राहु उनकी शिक्षा में अवरोध उत्पन्न कर सकता है।

यात्रा-तबादला

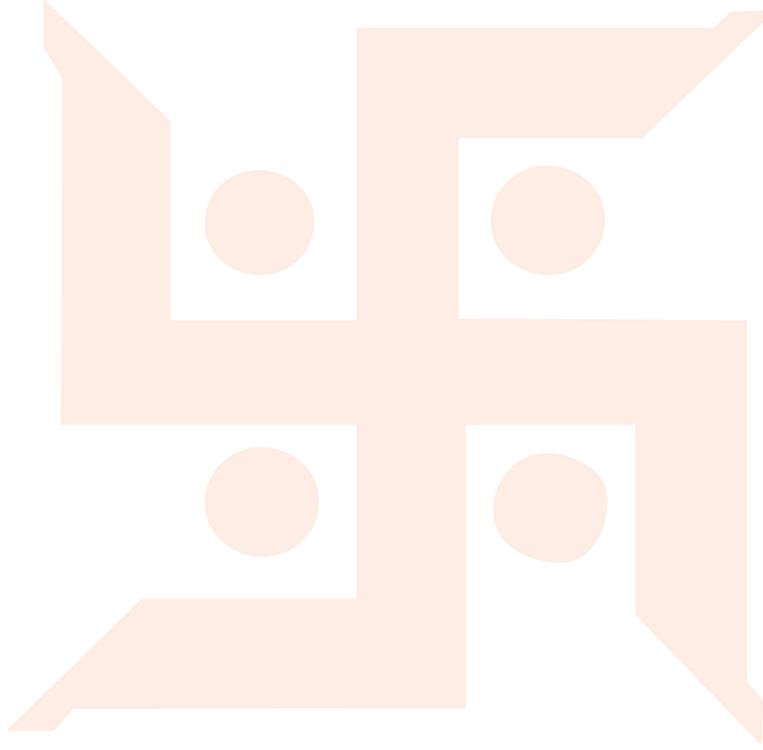
वर्ष के पूर्वार्द्ध में छोटी-मोटी यात्राओं के साथ साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। ये यात्राएं आपके लिए अनुकूल या उन्नतिकारक भी सिद्ध हो सकती हैं। इन यात्राओं के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। 02 जून के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मानोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्म स्थल की यात्रा हो सकती है अथवा अपने पूरे परिवार सहित दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त कर सकते हैं। द्वादश स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आप कोई विशेष अनुष्ठान संपन्न करेंगे। आप योग, ध्यान, एवं अपने गुरु के द्वारा दिये गये मन्त्रों का पाठ करेंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप दान पुण्य व गरीबों की सहायता अधिक करेंगे।

- प्रत्येक दिन सुबह स्नान के बाद सूर्य को जल दें।
- गणेशजी के मन्त्र का पाठ करें एवं नित्य प्राणायाम करें।
- एकनारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।



वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि छे भव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं सप्तम भव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं छे भव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष चतुर्थ भव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं दशम भव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं एकादश भव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं द्वादश भव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं एकादश भव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत अच्छा रहेगा। आप अपने कार्य व्यवसाय में सफलता प्राप्त करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आप कोई नया कार्य प्रारम्भ कर सकते हैं या किसी अनुभवी व्यक्ति से मिल कर अपने व्यापार में उन्नति के लिए कोई नई योजना भी बना सकते हैं। चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अपने घर से दूर स्थानान्तरण हो सकता है। प्रोपर्टी से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को अधिक लाभ प्राप्त नहीं होगा।

जून के बाद सप्तम स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके कार्य व्यवसाय में उत्तम वृद्धि होगी। उच्च अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। सफलता के पीछे आपकी पत्नी का पूर्ण सहयोग होगा। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं, तो उसमें इच्छित लाभ प्राप्त होगा और अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष उत्तम रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। षष्ठस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके शत्रु पक्ष से आपको धन लाभ होगा। धन निवेश के लिए भी अच्छा समय चल रहा है।

जून के बाद एकादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका रुको हुआ धन मिल सकता है व धनागम में वृद्धि होगी। इस समय कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। धन संचित करने में आपकी पत्नी का अहम सहयोग होगा। भाई-बहन या पुत्र के विवाह के अवसर पर भी धन खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्य रहेगा। चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव से आपके परिवार में विषमता की स्थिति बनी रहेगी। परिवार में एक दूसरे के प्रति वैचारिक मतभेद हो सकता है। परन्तु आप अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार पारिवारिक वातावरण अनुकूल करने की कोशिश करेंगे और आप सफल भी होंगे। आपकी माता का स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता है।

दशमस्थ गुरु के कारण आपको पिता का अच्छा सहयोग मिलेगा।

26 जून के बाद आपको प्रेम प्रसंगों में सफलता मिलेगी। यदि आप अविवाहित हैं तो आपका विवाह हो जाएगा। विवाहित व्यक्तियों का धर्मपत्नी के साथ समन्वय मधुर होगा। तृतीय स्थान में गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आप सामाजिक कल्याण के लिए कुछ विशेष कार्य संपन्न करेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। वे अपनी बौद्धिक शक्ति एवं कर्म के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

26 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रगति होने के शुभ योग बने हैं। यदि आपकी सन्तान विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। यदि आप दूसरे बच्चे की इच्छा रखते हैं तो गर्भाधान के लिए उत्तम समय है। 26 नवम्बर के बाद समय कुछ प्रभावित हो सकता है। इस समयान्तराल में सन्तान पर अधिक ध्यान दें।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। शारीरिक रूप से स्वस्थ एवं मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। मौसम जनित बीमारियों से यदि आप परेशान होते हैं तो जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे। आप अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध एवं शाकाहारी भोजन ही करें।

जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर और भी शुभ हो रहा है, लेकिन साथ ही लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से मानसिक परेशानी या शारीरिक आलस्यता बढ़ सकती है, जिसके फलस्वरूप आप बीमार हो सकते हैं। सुबह-सुबह व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। 26 नवम्बर के बाद आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए छठे स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपको प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिलने के प्रबल योग बन रहे हैं। इस समय के अंतराल में नौकरी भी मिल सकती है।

26 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है।

यात्रा-तबादला

चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव से अपने जन्म स्थल से दुर की यात्रा हो सकती है। स्थान परिवर्तन के योग भी बन रहे हैं। द्वादश स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी हो सकती है।

जून के बाद छोटी यात्राओं के साथ साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। वर्षान्त में जलीय स्थल या समुद्र के माध्यम से विदेश यात्रा भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में अधिक व्यस्तता के कारण आप पूजा पाठ के लिए अधिक समय नहीं निकाल पाएंगे। चतुर्थ राहु के प्रभाव से आपके नित्य नैमित्य पूजा प्रभावित हो सकती है। 26 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर ईश्वर के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास बढ़ेगा, जिसके फलस्वरूप आप निःस्वार्थ भाव से भगवान की पूजा व सत्कर्म करेंगे। 26 नवम्बर के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- घर में श्रीयन्त्र स्थापित करें और नित्य उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।
- सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें।
- प्रत्येक दिन प्राणायाम करें।
- अपने माता-पिता की सेवा करें।

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि छे भव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं सप्तम भव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरु में मकर राशि एवं चतुर्थ भव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं तृतीय भव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु द्वादश भव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं एकादश भव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं द्वादश भव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। पारिवारिक परेशानी के कारण आपका कार्य व्यवसाय प्रभावित हो सकता है। परन्तु छे स्थान का शनि आपको सफलता के लक्ष्य तक अवश्य पहुंचाएगा। फरवरी के बाद बड़े अधिकारियों या अनुभवी लोगों का सहयोग मिलेगा। जिसका उचित लाभ उठाकर आप अपने व्यापार में उन्नति करेंगे। यदि आप किसी के साथ मिलकर कार्य कर रहे हैं तो सफलता मिलेगी। चतुर्थ स्थान का राहु नौकरी करने वाले जातकों का स्थान परिवर्तन करा सकता है।

24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रतिकूल हो रहा है। आपको धोखा या व्यापार में हानि हो सकती है। गुप्त शत्रु व विरोधियों द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डालने की कोशिश की जा सकती है। अतः आपको सकारात्मक सोच में वृद्धि कर अपना आत्मविश्वास बनाए रखना होगा। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आप अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। कुछ अनावश्यक खर्च बढ़ सकते हैं। पारिवारिक खर्च अधिक होने के कारण इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे। 28 फरवरी से एकादश स्थान में गुरु के गोचरीय प्रभाव के चलते आपके आय के स्रोत बढ़ेंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरु हो जाएगा। पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। फंसा हुआ या रुका हुआ धन वापस मिल सकता है।

24 जुलाई के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रभावित हो रहा है। उस समय कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अतः किसी प्रकार के जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करे। लेन-देन के मामले में हमेशा सावधान रहें। परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए अनुकूल नहीं है। चतुर्थ स्थान के राहु आपके परिवार में विषम परिस्थिति उत्पन्न कर देंगे, जिससे पारिवारिक अनुकूलता भंग हो

सकती है। साथ ही परिवार में किसी बड़े व्यक्ति के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है। अतः अच्छा यही होगा की आप अपनी सहनशक्ति को बढ़ाएं, नहीं तो उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं। मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपका अच्छा संबंध बना रहेगा। फरवरी से आपको भाईयों सहयोग मिलेगा।

24 मई से घरेलू वातावरण अच्छा होना शुरू हो जाएगा। आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से सामाजिक पद व प्रतिष्ठि में वृद्धि होगी। समाज में आपका मान-सम्मान बढ़ेगा। जन कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे। सप्तमस्थ शनि आपकी पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं। अतः उनको स्वास्थ्य से संबंधित किसी प्रकार की लापवाही नहीं बरतनी चाहिए।

संतान

वर्ष के प्रारम्भ में संतान संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। द्वादश स्थान के गुरु बच्चे के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं जिससे उसकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है। 28 फरवरी से गुरु ग्रह का गोचर एकादश स्थान में हो रहा है जिसके बाद अचानक आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार होना शुरू हो जाएगा।

आपके बच्चे अपने बौद्धिक बल से आगे बढ़ेंगे। परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। 24 जुलाई से समय फिर से प्रभावित हो रहा है जिसके फलस्वरूप आपके बच्चों की उन्नति रुक सकती है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। द्वादशस्थ गुरु के कारण स्वास्थ्य संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे परन्तु 28 फरवरी के बाद एकादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आप जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे।

24 जुलाई के बाद बीमारी, दुर्घटना या किसी प्रकार के शरीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीवर से सम्बन्धित बीमारियां हो सकती हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा। सुबह सुबह व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा नहीं तो आपका स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए श्रेष्ठतम रहेगा। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से आप सारे शत्रुओं को पछाड़कर अपने करियर में आगे बढ़ेंगे। फरवरी के बाद से विद्यार्थियों के लिए समय बहुत उत्तम है। तकनीकी शिक्षा अथवा व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे।

24 जुलाई के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। आपकी शिक्षा में रुकावटें आ

सकती हैं। आलस्य की भावना आपकी उच्च शिक्षा में व्यवधान डाल सकती है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को उस समय सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता होगी।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होगी। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी परन्तु 23 फरवरी के बाद लम्बी यात्राएं भी खूब होंगी।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अपने घर से दूर स्थानान्तरण हो सकता है। यह स्थानान्तरण आपके प्रतिकूल स्थान पर होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप दान पुण्य अधिक करेंगे। भण्डारा, गरीबों को दान और दूसरे की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। फरवरी के बाद एकादशस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आपका मन पूजा-पाठ के प्रति ज्यादा आकर्षित रहेगा। परमात्मा की भक्ति एवं मन्त्र पाठ में रुचि लेंगे। सप्तमस्थ शनि ग्रह के प्रभाव से आप अपनी धर्मपत्नी के साथ कोई विशेष पूजा-पाठ करेंगे। जैसे- माता का जागरण, चौकी, अखण्ड रामायण पाठ इत्यादि।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- गणेशजी के मन्त्र का पाठ करें। बुधवार के दिन गणेशजी को दूर्वा चढ़ाएं।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि सप्तम भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु तृतीय भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु लग्न स्थान में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गशीर्ष होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं लग्न स्थान में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यावसायिक उन्नति के साथ होगा। सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपको व्यापार में अच्छा लाभ मिलेगा। वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होता रहेगा। 29 मार्च से कार्य व्यवसाय में कुछ व्यवधान आ सकता है। गुप्त शत्रुओं द्वारा कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। अतः इस समय के अंतराल में आपको कोई नया कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए। पहले से चले आ रहे व्यापार को और अच्छे ढंग से चलाना चाहिए।

05 अक्टूबर के बाद समय फिर से बहुत अच्छा हो रहा है। आपको व्यापार व कार्य क्षेत्र में सफलता मिलना शुरू हो जाएगा। भाग्य अनुकूल होने के कारण उन्नति के श्रेष्ठ योग बन रहे हैं। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय कर रहे हैं तो इच्छित लाभ की प्राप्ति होगी। आपके मित्र आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। सट्टा, शेयर बजार से जुड़े व्यक्तियों को लाभ प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल पर ही मान-सम्मान मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के लिए अच्छा रहेगा। आय में अनुकूलता बनी रहेगी परन्तु 29 मार्च के आय के मार्ग प्रभावित होंगे जिससे आपके आर्थिक क्षेत्र में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन सकती है इसलिए आपको आर्थिक मामलों में विशेष सावधानी से काम लेना चाहिए। कुछ खर्च अचानक आपकी आर्थिक स्थिति को बिगाड़ सकते हैं। अतः अभी से अतिरिक्त धन का संचय कर सकते हैं।

05 अक्टूबर के बाद समय फिर से अच्छा हो रहा है। आप के रुके हुए पैसे मिल सकते हैं जिससे आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार होना शुरू हो जाएगा। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से पत्नी या मित्रों से लाभ होगा। अपने व्यापार को और आगे बढ़ाने में भी धन व्यय करेंगे।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। छोटे भाईयों का

अच्छ सहयोग मिलेगा परन्तु 29 मार्च के बाद गुरु का गोचर प्रतिकूल होने से पारिवारिक अनुकूलता भी भंग हो सकती है। परिवार में एक-दूसरे के प्रति वेमनस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है। परिवार में कुछ लोगों का वर्ताव अच्छा नहीं रहेगा। ऐसे में आपको अपने विवेक से काम लेने होगा। 25 अगस्त के बाद ससुराल पक्ष के लोगों के साथ संबंध खराब हो सकते हैं।

05 अगस्त के बाद समय फिर से अच्छा हो रहा है। आपके परिवार में पुत्रादि का विवाह या कोई मांगलिक कार्य संपन्न होगा। उसमें आपकी अहम भूमिका होगी। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से पत्नी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से सामाजिक पद-प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष श्रेष्ठ रहेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा रहेगा। पंचम भाव पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति के अच्छे योग बन रहे हैं। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रुचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा।

आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय बहुत अच्छा है। उसका विवाह भी हो सकता है। 29 मार्च से 25 अगस्त तक का समय प्रभावित रहेगा। उसके बाद का समय अच्छा रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। लग्नस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि आपकी सेहत के लिए उत्तम है। यदि आप बीमार भी होते हैं तो आपकी सेहत शीघ्र ही अच्छी हो जाएगी। आपकी आरोग्यता व कार्यक्षमता में वृद्धि होगी। 29 मार्च के बाद अचानक आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। कफ, मधुमेह एवं पेट संबंधित बीमारियों के कारण आप परेशान हो सकते हैं। मौसमजनित बीमारियों से भी बचें।

25 अगस्त के बाद स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप का खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी। सकारात्मक ऊर्जा का संचार होगा जिससे रोगप्रतिरोधक शक्ति और अतिरिक्त मानसिक ऊर्जा प्राप्त होगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। व्यवसायिक व्यक्तियों को अच्छा लाभ मिलेगा। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को सफलता मिलेगी। 29 मार्च के बाद समय कुछ प्रभावित हो रहा है। उस समय प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा।

25 अगस्त के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। आप पढ़ाई-लिखाई में आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो जाएगा।

यात्रा-तबादला

तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से वर्षारम्भ से ही छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। ज्यादातर यात्राएं अचानक होंगी। 29 मार्च के बाद द्वादशस्थ गुरु विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे हैं।

25 अगस्त के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। यात्रा के दौरान या वाहन चलाते समय सावधानी बहुत बरतें, क्योंकि अष्टम स्थान का शनि यात्रा के लिए शुभ नहीं होता।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारंभ में लग्न, पंचम व नवम इन तीनों त्रिकोण भावों पर गुरु के गोचरीय प्रभाव के चलते आप ईश्वर भक्ति, योग, तीर्थाटन तथा गुरु भक्ति या गुरु दीक्षा लेने जैसी गतिविधियों में रुचि लेने के अतिरिक्त पूजा-पाठ, मंत्र जाप तथा यज्ञ आदि कर्म अधिक करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन लोहे का तवा गरीब व्यक्ति को दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि सप्तम भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु तृतीय भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं लग्न स्थान में गोचर करेंगे और फिर से मार्गि होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

व्यावसाय से जोड़ कर देखा जाए तो वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही हितकारी होगा। आपको प्रतीत होगा कि आपके कुछ सपने अभी भी अधूरे हैं और इसलिए इस साल आप उन सपनों को पूरा करने के लिए अधिक मेहनत करेंगे और अपने सपनों को साकार करेंगे। मुख्यतः ग्रहों के गोचर अनुकूल होने के कारण किसी भी समस्या का समाधान करना आपके लिए आसान होगा जिसके चलते आप अपने अधिकारियों की नजरों में आएंगे।

17 अप्रैल के बाद अष्टम स्थान के शनि व्यावसायिक जीवन में उतार-चढ़ाव की स्थिति बना रहे हैं। इस अवधि में आपका अपने प्रति विश्वास ही आपको लगातार विजय दिलाएगा। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचान में कुछ कठिनाईयों का अनुभव करेंगे। आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक क्षमता के अनुसार अपना कार्य करते रहें।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए सिर्फ लाभ को दर्शाता है। अपने लक्ष्य के प्रति आपका उत्साह उजागर हो जाएगा। निवेश करने के लिए भी यह एकदम उपयुक्त समय होगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में भी वृद्धि होगी।

अप्रैल के बाद राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आर्थिक समृद्धि में कमी आएगी। द्वितीय स्थान का राहु अचानक कुछ ऐसे खर्चे ला देगा जिसके चलते आपको आर्थिक तंगी आ सकती है। अतः इस समय के अंतराल में कोई बड़ा निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े लोगों की सलाह अवश्य लें, नहीं तो पैसा फंस सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ से ही आपके परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

राहु ग्रह का गोचर पारिवारिक वातावरण के लिए शुभ नहीं है। परिवार के कुछ

लोगों का बर्ताव अच्छा नहीं रहेगा। उस समय आपको अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखना होगा। ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध अच्छे नहीं रहेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप सामाजिक गतिविधियों में कम ही भाग लेंगे।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए श्रेष्ठ रहेगा। वर्ष का प्रथम माह बच्चों के लिए अच्छा रहेगा। 04 फरवरी से राहु एवं गुरु की युति संतान के लिए अच्छा नहीं है। इस समय के अंतराल में संतान संबंधित चिंताएं बढ़ सकती हैं। अतः उनके स्वास्थ्य एवं पढ़ाई-लिखाई पर आपको विशेष ध्यान देना चाहिए।

1 मई से गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने से आपके बच्चों की उन्नति होगी। आप अपने बच्चों से जितनी अपेक्षा रखते हैं वे उससे भी अच्छा करेंगे। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए यह उत्तम समय चल रहा है। आपके बच्चों के साथ मधुर संबंधों में वृद्धि होगी जिससे आपके घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा।

स्वास्थ्य

लग्न स्थान पर शनि की दृष्टि स्वास्थ्य के लिए अच्छी नहीं होती अतः आपको अपने स्वास्थ्य के प्रति थोड़ा सतर्क रहने की आवश्यकता है ताकि आप अपने जीवन का भरपूर लाभ उठा सकें। फिर चाहे व्यावसायिक जीवन हो या व्यक्तिगत जीवन, यदि आप स्वस्थ नहीं होंगे तो इसका बुरा असर आपके जीवन पर पड़ेगा।

राहु ग्रह का गोचर आपके स्वास्थ्य के लिए और प्रतिकूल हो रहा है। अतः आप खुद को बीमार होने से बचाएं। इस दौरान आप तनाव से भी ग्रसित हो सकते हैं। स्वस्थ रहने के लिए आप योग, ध्यान या सुबह-सुबह व्यायाम नियमित रूप से करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रथम माह विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। करियर में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करने की आवश्यकता है। व्यावसायिक शिक्षा व तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वालों के लिए यह समय श्रेष्ठ है।

17 अप्रैल के बाद समय कुछ प्रभावित हो रहा है। इस समय आपको अपना आत्मविश्वास बनाए रखना होगा। अपने मन को लक्ष्य के प्रति केन्द्रित कर तैयारी करते रहना चाहिए क्योंकि आपकी मेहनत ही आपको लक्ष्य तक पहुंचाएगी।

यात्रा-तबादला

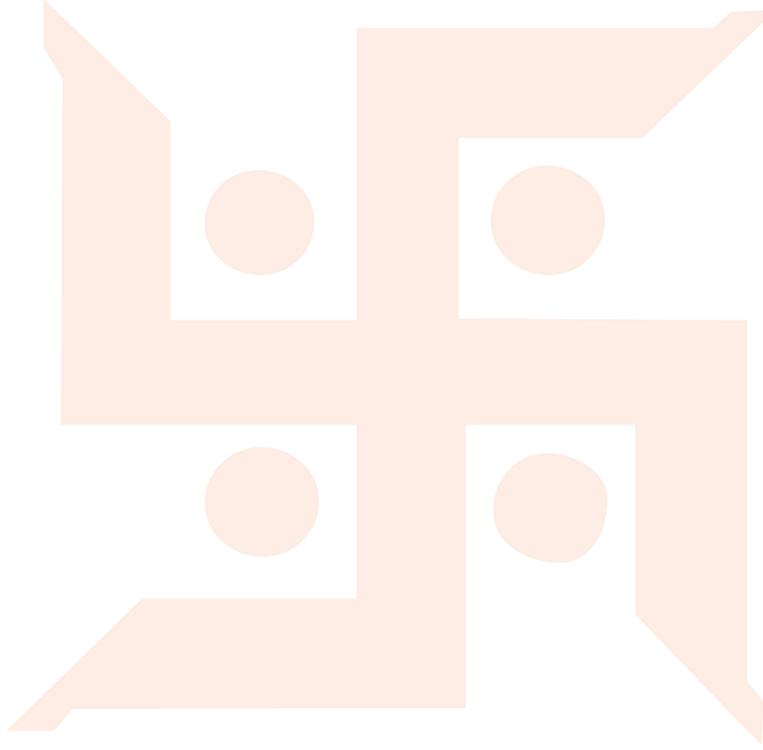
तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से आपके छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी परन्तु 01 मई से नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। इस समय आपकी व्यवसाय से संबंधित यात्रा हो सकती है।

यात्रा करते समय या वाहन चलाते समय सावधानी बहुत जरूरी है, क्योंकि शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से वाहन दुर्घटना या यात्रा के अंतराल चोरी होने के प्रबल संकेत हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा परन्तु 1 मई से नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी।

- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें। शनि मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाए।
- दुर्गा जी की उपासना करें या दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।



दशा विश्लेषण

**महादशा :- मंगल
(23/07/2019 - 23/07/2026)**

मंगल की महादशा 23/07/2019 को आरम्भ होगी और 7 वर्ष की होकर 23/07/2026 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में मंगल नवम भाव में स्थित है। मंगल की तृतीय, चतुर्थ और वारहवें भाव पर दृष्टि है। मंगल इस दशा के दौरान अच्छा फल देगा। इसके पूर्व आपकी दस वर्ष की चन्द्र दशा चल रही थी। आपकी यात्रा, कुछ व्यय, आध्यत्मिक उन्नति और सम्भवतः सफलता में कुछ बाधा हुई होगी। इस दशा के दौरान आपको सम्पत्ति, समृद्धि और परिवार से सुख की प्राप्ति तथा यात्रा होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपमें रोगों और कष्टों से लड़ने की शक्ति होगी। आपमें भरपूर-आत्मविश्वास तथा जीवनी-शक्ति होगी। मौसम में परिवर्तन के कारण आप सरदर्द, संक्रामक बीमारी तथा ज्वर से पीड़ित हो सकते हैं। इन मामूली बीमारियों को छोड़ इस दशा में आपका स्वास्थ्य सामान्यतया उत्तम रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति सृष्ट होगी। नवम भाव में स्थित होने के कारण मंगल आपको सम्पत्ति, समृद्धि, और सौभाग्य देगा तथा आपको पिता से लाभ मिलेगा। आपको सम्पत्ति, माता से लाभ मिल सकते हैं। किसी शुभ उद्देश्य के लिए व्यय भी हो सकता है। आपको सट्टे तथा निवेश से लाभ हो सकता है। जीविका के लिए सैन्य सेवा, इन्जीनियरिंग, सर्जरी, दवा के क्षेत्र लोहा-इस्पात से सम्बद्ध व्यवसाय या पुलिस के कार्य का चयन कर सकते हैं। आपके लिए योजना तथा प्रशासन से सम्बद्ध व्यवसाय लाभदायक हो सकते हैं। तकनीकी कार्य आपके लिये उपयुक्त होगा। आप एक सफल सर्जन हो सकते हैं। नौकरीपेशा लोगों को यश, ख्याति, शक्ति और अधिकार की प्राप्ति होगी और आपकी आय में वृद्धि तथा उच्चाधिकारियों का अनुग्रह प्राप्त होगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों का व्यय हो सकता है। आपको साझेदारी में सावधानी बरतनी चाहिए। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों का विदेश से व्यापार हो सकता है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

मंगल की महादशा के दौरान आपको वाहन-सुख मिलेगा। शुक्र की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्राएं होंगी। इस दशा के दौरान आपको जमीन-जायदाद की प्राप्ति होगी। मंगल की अन्तर्दशा में खास तौर से सम्पत्ति की प्राप्ति होगी।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी तकनीकी शिक्षा उत्तम होगी। उच्च शिक्षा में आप सफल होंगे और इस दशा में बहुत अच्छा करेंगे। गणित, विधि, इन्जीनियरिंग, विज्ञान तथा तकनीकी के विषय आपके लिए बहुत उपयुक्त होंगे। आपमें आत्मविश्वास होगा और आप कार्य कुशलता

से अपना लक्ष्य प्राप्त करेंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर होगा। आपको आपके बच्चों से सुख मिलेगा। आपके जीवनसाथी के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके जीवनसाथी को सम्बन्धियों से लाभ मिलेगा और अपने ही प्रयासों से धनोपार्जन करेंगे। आपकी माता का आप पर बहुत प्रभाव होगा। आपको उनसे लाभ मिलेगा। आपके पिता का स्वास्थ्य उत्तम होगा और सम्पत्ति, सफलता, यश और ख्याति की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को साझेदारी के व्यवसाय में धन की प्राप्ति होगी। आपके बड़े भाई-बहनों को लाभ का अवसर मिलेगा, उनके प्रभावशाली मित्र होंगे और उनकी मनोकामनाओं की पूर्ति होगी।

अन्तर्दशा :

मंगल की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा और आपको सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आगे राहु की अन्तर्दशा में कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं होगी। गुरु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको सफल निवेश तथा सट्टे और कुछ परिवर्तन से लाभ होगा। शनि की अन्तर्दशा के कारण आपको कुछ स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएं हो सकती हैं। बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको हर प्रकार का लाभ होगा। आगे केतु की अन्तर्दशा में कुछ मानसिक तथा शारीरिक समस्याएं हो सकती हैं। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपकी यात्रा और जीवन वृत्ति में उन्नति हो सकती है। सूर्य की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको यश, ख्याति, शक्ति, उत्तम स्वास्थ्य तथा सुख की प्राप्ति होगी जबकि चन्द्र की अन्तर्दशा में आपकी लम्बी यात्रा, व्यय तथा आध्यात्मिक उन्नति होगी।

**महादशा :- राहु
(23/07/2026 - 22/07/2044)**

राहु की महादशा 23/07/2026 को आरम्भ और 22/07/2044 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु प्रथम भाव में स्थित है। इस स्थान से राहु की दृष्टि सातवें भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 7 वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको सफलता, ख्याति, सम्पत्ति तथा उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति हुई होगी। राहु की वर्तमान दशा में आपको धन की प्राप्ति और शत्रुओं पर विजय मिलेगी तथा स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके शरीर के ऊपरी भाग तथा सिर में कष्ट हो सकता है। आप सरदर्द तथा पित्तदोष से ग्रसित हो सकते हैं और मौसम में



परिवर्तन के कारण संक्रामक बीमारी, चर्मरोग, चेहरे पर तथा माथे में फोड़ा आदि हो सकते हैं। इन मामूली शिकायतों को छोड़ आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त अच्छी रहेगी। आपको लाभ और समृद्धि की प्राप्ति होगी। आपकी धार्मिक, शैक्षिक और वैज्ञानिक उपलब्धियों के कारण आपकी सम्पत्ति और प्रतिष्ठा मिलेगी। आपको सट्टे में अच्छा लाभ मिलेगा। राहु की दशा में आपको धन का अचानक लाभ होगा। आपको मित्रों से लाभ हो सकता है। जीविका या व्यवसाय के लिए वायुयान चालन, दवा, कम्प्यूटर, मशीनरी, समुद्री सेवा, वायु-सेना आदि के क्षेत्र का चयन कर सकते हैं। दवा, रसायन, औजार, ड्रग, मशीनरी आदि का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों का स्थानान्तरण हो सकता है जो अन्त में लाभदायक होगा और अचानक लाभ तथा कार्य स्थान में अप्रत्याशित पदोन्नति होगी। व्यापार व्यवसाय से जुड़े लोगों को उच्चाधिकारियों से अच्छा लाभ, कार्य में सफलता तथा आय में वृद्धि होगी। व्यवसाय में उन्नति तथा आर्थिक खुशहाली के लिए यह दशा अत्यन्त उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जायदाद :

चन्द्र की अन्तर्दशा में आपको वाहन का सुख मिलेगा। आपको जीवन का हर सुख मिलेगा। आप अचल तथा भूसम्पत्ति के स्वामी होंगे। इस दशा के दौरान आपकी अनेक यात्राएं होंगी। बुध की अन्तर्दशा में आपकी छोटी जबकि गुरु की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी। विदेश यात्रा हो सकती है।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। इन्जीनियरिंग, गणित, विज्ञान, अन्तरिक्ष अनुसन्धान तथा कम्प्यूटर विज्ञान में आपकी रुचि होगी। आपको आपके प्रतिद्वन्द्वियों पर विजय मिलेगी और परीक्षा तथा प्रतियोगिता में अच्छा करेंगे। आप में नेतृत्व-गुण और साहस है और आप स्वभाव से स्वतन्त्र हैं। आप चतुर और कूटनीतिज्ञ हैं।

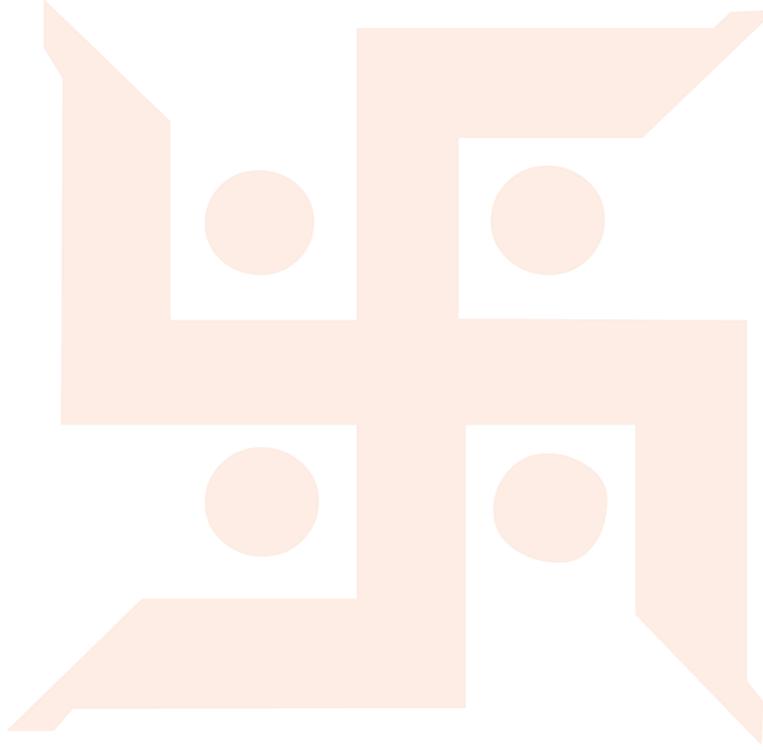
परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके बच्चे भाग्यवान और खुशहाल होंगे। आपका उनके साथ सम्बन्ध अच्छा रहेगा। आपके जीवनसाथी की यात्रा, विदेशियों से सम्पर्क और भौतिक लाभ होगा। आपके जीवन साथी के साथ आपका संबंध मधुर रहेगा। आपकी माता यात्रा और तीर्थाटन पर जाएंगी और दान-पुण्य का कार्य करेंगी और आपके पिता को सट्टे में लाभ तथा धन में अचानक वृद्धि होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को हर प्रकार का लाभ तथा सम्पत्ति मिलेगी। बड़े भाई-बहन साहसी और कठिन परिश्रमी होंगे, उनकी छोटी यात्रा होगी और वे संचार-व्यवस्था के क्षेत्र में सफल होंगे। आपका उनके साथ सम्बन्ध मधुर रहेगा। इस दशा के दौरान आपको अच्छा सम्मान, भौतिक समृद्धि और सम्पत्ति की प्राप्ति होगी।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के दौरान आपको सम्पत्ति और लाभ, कार्य में सफलता और खुशहाली मिलेगी। गुरु की अन्तर्दशा में आपकी यात्रा होगी और समृद्धि तथा

उच्च शिक्षा की प्राप्ति होगी जबकि शनि की अन्तर्दशा में व्यवसाय में प्रगति और उपार्जन अच्छा होगा। बुध की अन्तर्दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य कुछ खराब होगा, किन्तु ननिहाल से लाभ और छोटी यात्रा होगी। केतु कुछ समस्या दे सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में साझेदारों से लाभ मिलेगा और विवाह होगा जबकि सूर्य की अन्तर्दशा के दौरान बच्चों से सुख और सङ्घ में सफलता मिलेगी। चन्द्र की अन्तर्दशा में आपको माता से लाभ और जीवन का सुख मिलेगा जबकि लग्न स्वामी मंगल की अन्तर्दशा के दौरान यश, ख्याति, उत्तम स्वास्थ्य तथा सफलता मिलेगी।



**अंतर्दशा :- राहु - राहु
(23/07/2026 - 04/04/2029)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 23/07/2026 को प्रारंभ होकर 22/07/2044 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 8 मास 12 दिन होगी जो आपके लिए 23/07/2026 को प्रारंभ होकर 04/04/2029 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में लग्न में स्थित है। लग्न शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है।

राहु छायाग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती। स्थिति के अनुसार यह शुभ या अशुभ हो सकता है। लग्न में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के सप्तम भाग पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप बिना उद्देश्य के इधर-उधर भटक सकते हैं। मित्र और रिश्तेदार आपसे दूर हो सकते हैं क्योंकि आपका व्यवहार शत्रुतापूर्ण हो सकता है। आप स्वार्थी, शक्की, विद्रोही और निम्न कोटि के कर्म करने वाले हो सकते हैं। आपको नकारात्मक विचारों से दूर रहना चाहिए; अपने बल पर कार्य करना चाहिए। स्वास्थ्य दुर्बल हो सकता है, इसके लिए अपरंपरागत उपचार का सहारा ले सकते हैं। विवाह जीवन में तनाव आ सकता है।

अरिष्ट से बचाव के लिए राहु वैदिक मंत्र के 18000 जाप करें।

**अंतर्दशा :- राहु - गुरु
(04/04/2029 - 29/08/2031)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 23/07/2026 को प्रारंभ होकर 22/07/2044 को समाप्त होगी। इस महादशा में बृहस्पति अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 4 मास 24 दिन रहेगी जो आपके लिए 04/04/2029 को प्रारंभ होकर 29/08/2031 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है। बृहस्पति शुभ ग्रह है। नवम भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 1, 3, 5 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप दार्शनिक, उपदेशक या अध्यापक हो सकते हैं। व्याख्यान के लिए देश-विदेश का भ्रमण कर सकते हैं। संयमित जीवन व्यतीत करेंगे; ईश्वर में ध्यान लगाएंगे। अपने से बड़ों के आज्ञाकारी होंगे।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए बृहस्पति के वैदिक मंत्र के 19000

जाप करें।

